संजय की कलम से

आध्यात्मिकता के मार्ग में संघर्ष से पार होने के प्रयत्न को ही 'पुरुषार्थ' कहा जाता है। पुरुषार्थी को चिन्ता इस बात की नहीं होती कि अन्य कोई उससे विरोध, द्वन्द्व अथवा संघर्ष का वातावरण पैदा करता है बल्कि उसकी कोशिश यह होती है कि वह स्वयं उस दलदल में न फँसे और यदि हो सके तो दूसरे को भी उससे निकाले। **वह इस बात से व्याकुल नहीं होता कि दूसरा कोई उसका मुकाबला करता है अथवा उसकी निन्दा करके उसके व्यक्तित्व को आघात पहुँचाता है बल्कि उसका प्रयत्न यह होता है कि उसका अपना मन स्थिर रहे, वाणी निर्मल बनी रहे और सद्भावना में अंतर न आये। उसकी कोशिश यह होती है कि वातावरण प्रदूषित न हो और दूसरों को देखने या सुनने को बुराई न मिले बल्कि संसार में अच्छाई फैले, प्रीति बढ़े और सद्भावना से वातावरण सुगन्धित हो।** वह सोचता है कि मर्यादा भंग न हो, अनुशासन न टूटे, पवित्रता पर अपवित्रता हावी न हो और आसुरी तत्वों को बढ़ावा न मिले बल्कि सदाचार, पवित्रता और सात्विकता की जयजयकार हो और वातावरण ऐसा बने कि जिसमें चहुँ ओर प्रसन्नता की लहर दौड़ उठे, सबके मन हर्ष से खिल उठें, सबमें भ्रातृत्व की भावना प्रधान हो और विश्व में प्राणी प्रेम से एक-दूसरे के निकट आयें।

इस आदर्श लक्ष्य अथवा मनोरथ को लेकर वह जहाँ अपने पुरुषार्थ पथ पर सुदृढ़तापूर्वक चलता है, वहाँ वह निष्पक्ष रूप से समालोचक बनकर सुधार की चेष्टा करता है तथा स्थिति परिवर्तन के लिए प्रयत्नशील भी होता है। इस प्रकार के संघर्ष से सही पुरुषार्थी निश्चेष्ट नहीं होता और न निष्क्रियता को अपनाता है परन्तु हाँ, यदि इस संघर्ष में वह देखता है कि परिस्थितियों का आक्रमण, विकटताओं का विस्फोट और द्वन्द्व, द्वेष, दुर्भावना और दुर्साधना की बाढ़ अत्यन्त प्रबल है तो वह अपनी योगचर्या, आध्यात्मिक निष्ठा एवं दिव्य गुणों के विकास के पुरुषार्थ को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए कुछ समय के लिए स्वयं को एक ओर सुरक्षित कर लेता है। ❖

❀ अमृत सूची ❀

- धर्म और कर्म का तालमेल (सम्पादकीय) 4
- श्रद्धांजलि 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ...7
- 'पत्र' सम्पादक के नाम 9
- विश्व में अद्भुत और अनोखा .10
- माथे पर हाथ रख बाबा ने कहा .11
- कर्मों की गुह्य गति 13
- श्रद्धांजलि 15
- पशुपतिनाथ की धरती पर 16
- जब मिला बाबा 19
- भय को भगायें.................20
- छलक जाते थे 22
- बाबा ने किया सूली को कांटा..23
- गुणों की धारणा 24
- बाबा ने करवाया बाइज्जत 25
- अच्छे व्यवहार ने करवाई 26
- आवश्यक सूचना 26
- शोक में सहारा बना............27
- क्रोध और हम.................28
- समस्या को सुअवसर में 29
- बम-बम भोले (कविता) 31
- सचित्र सेवा समाचार 32
- कलियुग के नजारे.............34

सदस्यता शुल्क

भारत	**वार्षिक**	**आजीवन**
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

धर्म और कर्म का तालमेल

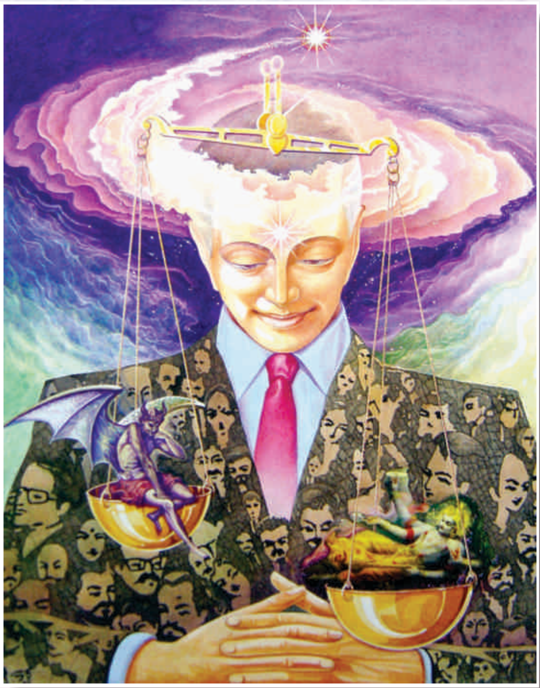

मानव आत्मा जब तक शरीर में है, कर्म से मुक्त नहीं हो सकती। उसमें भी युवावस्था सर्वाधिक कार्यशील अवस्था है। इस अवस्था में उसमें अतिरिक्त शक्ति होती है। यदि इस अतिरिक्त शक्ति का रचनात्मक कार्यों में प्रयोग न किया जाए अथवा युवकों को सन्तोष, शान्ति, सद्विचार देने वाला कोई उपाय न अपनाया जाए तो वह अतिरिक्त शक्ति या तो उन्हें बुरी आदतों में डाल देती है या वे उन शक्तियों का दुरुपयोग विध्वंसात्मक गतिविधियों में करते हैं। अतः कर्म के साथ धर्म अर्थात् सद्गुणों की धारणा का सन्तुलन बाल्यकाल से ही अनिवार्य है। हम कह सकते हैं कि जब मानव सर्वाधिक कर्मशील हो तब उसका सर्वाधिक धर्मशील होना भी अनिवार्य है।

धर्म कहता है, झुक जाओ

मान लीजिए, दो गाड़ियाँ आमने-सामने हैं। दोनों के चालकों को अपने-अपने कार्य की जल्दी है। एक कहता है, तुम पीछे हटो, मैं निकलूँ। दूसरा कहता है, नहीं, तुम थोड़े पीछे हट जाओ, पहले मैं निकल जाता हूँ। इस मैं-मैं में दोनों अकड़कर खड़े हैं। दोनों कर्मशील तो हैं, दोनों को अपने-अपने कार्यों की जल्दी तो है परन्तु दोनों में से एक भी धर्मशील हो अर्थात् धर्म की धारणा वाला हो, गुणों की धारणा वाला हो तो उन दोनों की मैं-मैं के दौरान दोनों के पीछे की ओर आ खड़ी हुई 100-100 गाड़ियों का समय भी बच सकता है। धर्म कहता है, **'झुक जाओ, बदल जाओ, गलती किसकी है, यह मत खोजो, समाधान कैसे हो, यह खोजो। झुकने वाला महान है, झुकने वाला अतीन्द्रिय सुख में झूलता है, झुकना ही जीवित की शान है, अकड़ना मुर्दे की पहचान है, यदि मेरे पीछे हटने से समाधान हो सकता है तो मैं हटने को तैयार हूँ।'** यदि कर्म के साथ धर्म के इन उच्च भावों की धारणा हो तो मिनट में रास्ता साफ हो सकता है। जाम में फँसे विद्यार्थी, बीमार, ट्रेन या हवाई जहाज पकड़ने वाले यात्रीगण – सभी लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं परन्तु कोरे कर्मशील बनकर, धर्म को कर्म से जुदा करने से हम अनजाने में अपने और दूसरे के कर्मों को बाधित करते रहते हैं। इस धर्म को अर्थात् नम्रता को यदि वृद्धावस्था में धारण कर भी लेंगे तो उससे समाज को क्या फायदा होगा, इसकी ज़रूरत तो तब थी जब हम कार्यशील थे।

गुणों की धारणा ऊपर है या जीभ का स्वाद

भोजन खाना एक कर्म है पर इस कर्म के साथ धर्म अर्थात् इस धारणा का तालमेल चाहिए कि मैं ऐसा कुछ भी ना खाऊँ जो दूसरे को पीड़ा दे। हमें देखना है कि जीभ का स्वाद ऊपर है या गुणों की धारणा ऊपर है। कई लोग इसी स्वाद के वश पशु-हत्या करते हैं या करवाते हैं और तर्क देते हैं कि संसार का नियम है, एक प्राणी, दूसरे प्राणी को मारकर ही जिन्दा रह सकता है जैसे कि शेर यदि ना मारे तो

खुद भूखा मर जाए, छिपकली, मेंढ़क सभी अपने को जिन्दा इसी आधार पर रखते हैं। मानव की बुद्धिमानी देखिए, **यदि उसे कहा जाए, ठीक है, तुम खाने में शेर की नकल कर रहे हो तो वह तो जंगल में बिना बिछाए, ओढ़े जीवन गुजर कर लेता है, स्कूल नहीं जाता.....तुम भी उसकी तरह जंगल में रहो, खाओ, तब वह कहेगा, मैं कोई जानवर हूँ क्या? मैं तो जानवरों से श्रेष्ठ हूँ, मुझे सभ्य तरीके से रहने का हक है। इसका अर्थ है केवल खाते वक्त जानवर बनना चाहता है, शेष समय नहीं।**

बढ़ती अमर्यादा और घटती आयु

जानवरों में कोई मर्यादित रिश्ते नहीं होते। कोई माँ, बहन, बेटी नहीं होती। उनकी वंशवृद्धि में किसी जाति, कुल, गोत्र की सीमाएँ, आयु या वर्ग का प्रश्न नहीं होता। ऐसे अमर्यादित जानवर का खून मानव को नहीं चढ़ता, चढ़ना तो माँस भी नहीं चाहिए पर जबरदस्ती चढ़ा लेता है, फिर परिणाम क्या सामने आ रहे हैं? अमर्यादित संस्कार भी पनपते जा रहे हैं, वह भी माँ, बहन, बेटी की मर्यादाओं को तिलांजली देकर स्वेच्छाचारी बन रहा है। जिन जानवरों का माँस खाता है उनकी आयु मानव की भेंट में बहुत कम होती है। जब कम आयु वाली सेल (कोशिकाएँ) उसके शरीर में जाएंगी तो आयु तो कम होगी ही। **अकालमृत्यु के बहुत सारे कारणों में एक कारण यह भी है, हम दूसरों को मारकर अपनी भी जीने की घड़ियों को घटाते जा रहे हैं। अतः हम खाएँ परंतु दया, सहिष्णुता, सहानुभूति, धैर्य, स्वच्छता, संयम आदि गुणों की धारणा को साथ लेकर खाएँ। कर्म और धर्म के इस तालमेल से स्वास्थ्य भी और आपसी सम्बन्ध भी सुखदायी रहेंगे।**

दूसरों को ना देख अपना प्रबन्ध करें

सद्‌गुणों की धारणा ही धर्म है और अवगुणों को अपनाना ही अधर्म है। जब किसी को कहा जाता है कि आत्मा को गुणवान बनाओ, अवगुणों से उसे मैला मत करो तो बहुत-से लोगों का उत्तर होता है कि आज का माहौल ऐसा है कि ना चाहते भी अवगुण अन्दर चले जाते हैं। दूसरों की बुरी बातों का, ना चाहते भी असर आ ही जाता है, क्या करें? विचार कीजिए, हम कहीं जा रहे हैं और रास्ते में गन्दा नाला होने के कारण या किसी पशु के मृत शरीर के पड़ा होने के कारण बहुत ही गन्दी बदबू चारों ओर फैली हुई है। हम तुरन्त रूमाल निकालकर नाक पर रख लेते हैं ताकि बदबू को फेफड़ों में जाने से रोक सकें। यहाँ हम इन्तज़ार नहीं करते कि दूसरे ने रूमाल निकाला या नहीं, नाक पर रखा या नहीं, अपने को बदबू से बचाया या नहीं, हमें तो बस यह रहता है कि हमें तुरन्त बदबू से बचना है। इसी प्रकार अवगुणों वाले वातावरण से भी हमें अपने (आत्मा) को बचाना है। अवगुणों की बदबू भी तो बड़ी भयंकर है। हम दूसरों को ना देख, अपना प्रबन्ध करें कि कोई अवगुण हमारे अन्दर ना आ जाए। जैसे बदबू शरीर को बीमार कर देती है, इसी प्रकार अवगुणों की बदबू आत्मा को बीमार कर देती है। सफल वही होता है जो दूसरों को न देख, अपने मार्ग पर चलता रहता है। ऊँचे चरित्र वाला यदि हमें आस-पास या दूर-दूर तक कोई नहीं दिखाई दे रहा, तो भी हमें अपने लक्ष्य पर अडिग रहना है, क्योंकि यह भगवान का आदेश है।

कर्म करते गुणों का शृंगार न भूलें

लौकिक पढ़ाई में विद्यार्थियों की परीक्षा के पेपर जब चेक किए जाते हैं तो परीक्षक दो बातें देखता है, एक, विषय के अनुरूप कितना लिखा हुआ है? दूसरा, लिखाई कैसी है? कई विद्यार्थियों की विषयवस्तु तो बहुत अच्छी होती है पर लिखाई साफ ना होने के कारण नम्बर कट जाते हैं। इसी प्रकार कई विद्यार्थी ऐसे होते हैं कि उनकी लिखाई तो अच्छी होती है परन्तु विषयवस्तु कमजोर होती है, तो भी नम्बर कट जाते हैं। अधिकतम नम्बर उसी को मिलते हैं जिसकी दोनों चीजें अच्छी हों। इसी प्रकार जीवन रूपी परीक्षा भवन में भी यदि किसी मानव का धर्म अर्थात् धारणा (सत्य, प्रेम, पवित्रता, दया, ...) का पहलू तो बहुत ऊँचा हो पर वो कर्म ठीक ना करे या बिल्कुल भी ना करे या कर्म में दूसरों पर आधारित रहे तो उसके भी नम्बर कट जाते हैं और यदि कोई कर्म खूब करे पर कर्म करते गुणों की

धारणा भूल जाए तो भी उसके नम्बर कट जाते हैं। पूरे नंबर तभी मिलते हैं जब कर्म करते हुए गुणों की धारणा को बनाए रखा जाए। कर्म की जल्दबाजी में धर्म को अर्थात् गुणों के श्रृंगार को भूलना नहीं चाहिए।

कूलर में भी दो ऑप्शन होते हैं, एक हवा का और दूसरा पानी का। हम चाहें तो केवल हवा लें और चाहें तो हवा के साथ पानी की ठण्डक भी अनुभव करें। जब हवा के साथ पानी की ठण्डक मिल जाती है तो गर्मी में ज्यादा आरामदायक लगती है। इसी प्रकार कर्म करके हम मानव को सुख देते हैं परन्तु उस कर्म में यदि गुणों का समावेश हो जाए तो बुराइयों से तपते मानव को अधिक आराम महसूस होता है। जीवन में कर्म के साथ धर्म को जोड़ने से वह अधिक उज्ज्वल बन जाता है।

शिव भगवानुवाच- **''आजकल की दुनिया में धर्म और कर्म – दोनों ही विशेष गाये जाते हैं। धर्म और कर्म – ये दोनों ही आवश्यक हैं लेकिन आजकल धर्म वाले अलग, कर्म वाले अलग हो गये हैं। कर्म वाले कहते हैं कि धर्म की बातें नहीं करो, कर्म करो और धर्म वाले कहते हैं कि हम तो हैं ही कर्म-संन्यासी। लेकिन संगम पर 'धर्म और कर्म' को इकट्ठा करते हैं। धर्म का अर्थ है दिव्य गुण धारण करना। चाहे कैसी भी जिम्मेवारी का कर्म हो, स्थूल कर्म हो, साधारण कर्म हो या बुद्धि लगाने का कर्म हो लेकिन हर कर्म में धारणा अर्थात् कर्म और धर्म इकट्ठे रहते हैं? कहावत है कि 'एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं' अथवा 'एक हाथ में दो लड्डू नहीं आते' लेकिन संगम पर असम्भव बात संभव हो जाती है। यहाँ एक ही समय पर 'धर्म भी हो और कर्म भी हो' – इसका ही अभ्यास सिखलाते हैं। कर्म में यदि धर्म कम्बाइन्ड नहीं तो साधारण कर्म रह गया ना इसलिए हर कर्म में धर्म का रस भरना चाहिए। यह चेक करना पड़े कि धर्म को किनारे कर कर्म कर रहे हैं अथवा धर्म के समय कर्म को किनारे तो नहीं कर देते हैं? धर्म को छोड़ कर्म में लग गये, यह भी निवृत्ति मार्ग हो गया। तो सदा प्रवृत्ति मार्ग रहे। ऐसा अभ्यास जब सबका सम्पन्न हो जाए तब समय भी सम्पन्न हो।''**

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

श्रद्धांजलि

साकार मात-पिता के हस्तों से पली, अथक सेवाधारी, सर्व की स्नेही, त्याग-तपस्या की प्रतिमूर्ति, बाल ब्रह्मचारिणी, आगरा सबज़ोन की मुख्य संचालिका विमला बहन, जो सेवाओं की आदि रत्न थी। भारतवर्ष में जब पहले-पहले सेवायें शुरू हुईं, उसी समय आपने ज्ञान प्राप्त किया और 1955 में अपना सम्पूर्ण जीवन विश्व कल्याण की बेहद सेवा में समर्पित कर दिया। आगरा तथा उसके आसपास अनेक सेवाकेन्द्र, उपसेवाकेन्द्र और गीता पाठशालायें खोलकर उनका कुशल संचालन किया।

आपके दिशा-निर्देश तथा अलौकिक पालना में पलते हुए अनेक ब्रह्माकुमारी बहनें एवं बी.के.परिवार आध्यात्मिक मार्ग पर सतत आगे बढ़ते रहे। आपने आगरा में ताजमहल के समीप बहुत सुन्दर म्यूजियम का भी निर्माण कराया। आप बहुत सरल स्वभाव की, गम्भीरमूर्त, मिलनसार थीं। आपका स्वास्थ्य अचानक खराब हुआ। उसी समय आगरा से दिल्ली में इलाज के लिए लेकर गये। दिनांक 28 सितम्बर, 2016 को सायं 6.30 बजे आप अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गईं। आपकी लौकिक आयु लगभग 80 वर्ष थी। ऐसी त्यागी, तपस्वी, स्नेही, महान आत्मा के प्रति पूरा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

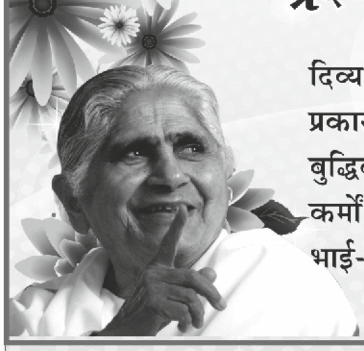

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न :- साकार बाबा के अंग-संग के अनुभव सुनाइये?

उत्तर :- निर्मलशान्ता दादी मेरे साथ स्कूल में पढ़ती थी। जब मैं बाबा के घर जाती थी तो बाबा दादी निर्मलशान्ता से भी ज्यादा मेरे को प्यार करता था। बाबा घर में गीता पढ़ता था तो मैं जाकर उनसे गीता सुनती थी। पढ़ती तो मैं भी थी पर जब बाबा से सुनती थी तो और अच्छी लगती थी। हर बात बाबा की न्यारी थी। बाबा रॉयल भी बहुत थे। इतनी रॉयल्टी थी जो बाबा के पास जाओ तो बहुत प्यार से खिलाता था, रायल्टी और सच्चाई बेहद थी। ऐसा कोई इन्सान देखा ही नहीं; बड़े-बड़े सब देखे थे; राजे-महाराजाएँ भी देखे होंगे; साधु, संन्यासी, महात्माएँ बहुत देखे होंगे पर मैं जो आशिक हुई हूँ ना, बाबा की सच्चाई पर, प्यार पर, स्नेह पर..। कलकत्ते में हम दो बहनें बाबा के पास गई थीं। बाबा ने हमारे लौकिक बाप से पूछा, इन बच्चियों को कहाँ रखा है? हम तो गेस्ट हाउस में रहे हुए थे। बाबा ने कहा, इन बच्चियों को अपने बाप के घर रहना है; इतना प्यार! बाबा की दुकान पर गये, इतना प्यार!

हमारा लौकिक में मामा था, बाबा का मैनेजर था, उससे एक भूल हो गई। कोई हीरे-जवाहरात खरीदने के लिए आये, देखे, पसन्द किए, अलग रख कर गये, कहा, हम बैंक से पैसा लेकर आते हैं। थोड़े समय के बाद लौटकर आए और झूठे हीरे की बिलकुल वैसी ही चीज साथ ले आये। असली रख ली, नकली लौटा दी, फिर कह दिया, हमको पैसा मिला ही नहीं। वे चले गये तो थोड़े समय के बाद मामा को ख्याल आया कि मैं देखूँ तो सही, तो पता चला कि वे तो धोखा दे गये, सच्चा लेकर, झूठा छोड़ कर गये। उसको धक्का लगा कि मैंने भूल की है। पर बाबा ने एक अक्षर भी उसको नहीं बोला। यह देखकर तब भी हमको लगा, वण्डर है! बाबा को ज़रा-सा भी गुस्सा करते हुए नहीं देखा, कभी नहीं देखा। लौकिक से ही बाबा इतना प्यारा लगता था, इतना प्यारा लगता था जो अभी भी मैं कहूँ, कितना प्यारा है! बाबा की दुकान पर एक ने चोरी की। बाबा पुचकार कर बोला, यहाँ आओ, बच्चे, तुमको चाहिए तो ले लो ना बाप से। इतनी ईमानदारी कहीं नहीं देखी, बाबा में देखी। तो बचपन से ले करके मैं बाबा को देखती ही रहती थी।

मेरी लौकिक बहन लक्ष्मणा, यज्ञ में पहले आ गई थी। वह स्कूल में होशियार थी, मैं थोड़ी भोली-भाली थी। सबको अच्छी वो लगती थी पर मुझे लगता था, जैसी हूँ, वैसी हूँ, ईश्वर की हूँ। चालाकी करना मुझे आता ही नहीं था, दिखावा करना आता ही नहीं था। समय सफल करने का बचपन से लेकर संस्कार है। लौकिक माँ को भी कहती थी– उठो, बैठो, राम-राम लिखो, सोती काहे को हो, नौकरों से काम क्यों लेती हो! राम नाम की चिटकी बनाकर आटे की गोली में डालते थे, शाम को नदी किनारे जाकर राम नाम का उच्चारण करते-करते मछलियों को गोलियाँ खिलाते थे ताकि मछलियों का भी उद्धार हो जाये। बाबा

देखता था कि यह करती क्या है? बाबा को मेरे बारे में पता था, बचपन से प्यार करता था। दादा वासवानी भी प्यार करता था। गाँवों में जाती थी, शाकाहारी बना कर आती थी। दादा वासवानी खुश होता था। उसने बहुत प्यार किया, सभी ने प्यार किया होगा। मैं पूछती थी, तुम भगवान को कैसे याद करते हो, ये मत कहो कि ये मन्त्र बोलो, ये करो। घड़ी-घड़ी खींच होती थी बाबा के चरित्रों को देखकर के, सच्चाई को देखकर के, अभिमान का अंश नहीं था बाबा में, भले ही पैसा बहुत था।

एक बार बाप के साथ पैदल जा रही थी। सवेरे उठकर सत्संग में जाने की आदत थी। बाबा सामने से पैदल करके आ रहे थे। मैंने बाबा को देखा। बाबा ने मेरे को दृष्टि दी। बाबा दिखाई नहीं पड़ा, इतनी लाइट, इतना आकर्षण हुआ कि मेरा भटकना पूरा हो गया। लौकिक बाप से मैंने पूछा, आपने देखा? कहा, मैंने तो नहीं देखा। मैंने कहा, आपने नहीं देखा कितनी लाइट थी बाबा में! बस लौकिक से रग टूट गई, यह (ब्रह्मा) मेरा बाबा है, यह लौकिक है। असुल उसके बाद जरा-सा भी भान नहीं रहा, यह मेरा बाप है और उसको भी नहीं रहा, यह मेरी बेटी है। पहचान से इतनी ताकत आ गई। मीठे-प्यारे बाबा की इतनी ईश्वरीय आकर्षण थी!

लौकिक बहन के लिए बाबा ने कहा, ये अच्छी ज्ञान में जाएगी। मेरे लिए कहा, इसका (दादी का) कोई कर्मबन्धन होगा। मुझे थोड़ा-सा संशय उठा, बाबा ने नहीं पहचाना, मैं कैसी हूँ, ये कैसी है। मुझे अन्दर है कि मैं जल्दी-जल्दी ईश्वर को पाऊँ और इसको लगा पड़ा है कि मैं मायावी बन जाऊँ, अच्छा पढ़ूँ-लिखूँ, अच्छी शादी करूँ। उसको तो ये है और मुझे बाबा कहता है..तो थोड़ा-सा संशय उठा। ड्रामा प्लैन अनुसार कर्मबंधन शुरू हो गया। वो सरेन्डर हो गई बाबा के पास, बड़ी तेज चली गई। मैंने कहा, कैसे बाबा ने सच बोला? बाबा को पता था कि मेरे को कर्मबंधन पास करना है, उसको नहीं पास करना है। तो ड्रामा की जो कहानी है, बड़ी वण्डरफुल है। बाबा ने जब-जब जो शब्द उच्चारण किया होगा ना, हुआ है, वण्डरफुल, पीछे पता

चला लेकिन हमने बड़े दिल से स्वीकार किया है।

बाबा को पता था, बच्ची कर्मबंधन में फँसी है, बुद्धि में बाबा-बाबा है, कहाँ आँख नहीं डूबी, कुछ चाहिए नहीं, न मनुष्य चाहिएँ, न साथी चाहिएँ, न पैसा चाहिए। लक्ष्मणा के हाथ बाबा ने संदेश भेजा क्योंकि मैं बांधेली थी, छुट्टी नहीं थी कहीं जाने की। मैं कहती थी, तो कहते थे (सत्संग के अलावा), वहाँ चली जा। अरे, जब सत्संग में जाने की छुट्टी नहीं है तो मैं कहीं नहीं जायेंगी। न कभी सिनेमा में गई, न किसी शादी में गई, मुझे कहाँ जाना ही नहीं है, यह पक्का था। दरवाजे में बन्द थी, कोई मिलने नहीं आ सकता था। मीठे बाबा ने क्या किया, लक्ष्मणा के हाथ संदेश भेजा। पीछे के दरवाजे से वह आई। वो घड़ी मेरे लिये बहुत सुन्दर थी। वह बाबा का संदेश लाई, 'लौट शक्ति देश अपने, क्यूं भुलाया है ओम को।' औरों को सुनाई नहीं पड़ा पर मैंने सुन लिया। चेहरा देख रही हूँ उसका, बड़ा लाल-लाल, मेरा चेहरा पीला-पीला। उसका हाथ देखूँ, अपना हाथ देखूँ, हाथ उसका लाल-लाल, शक्ल लाल-लाल, ये तो शेरनी है, मैं तो बकरी हो गई। फिर कहे, 'लौट शक्ति देश अपने, क्यूं भुलाया है ओम को', बस, मुझमें शक्ति आ गई। यह था मेरे मीठे बाबा का संदेश। शक्ति आ गई, ऐसे बंधन तोड़े जैसे कोई जेल के दरवाजे खुल जाते हैं। बाबा ने कैसे मुझे खींच लिया! तो हिसाब-किताब आए, चुक्ता कैसे करने चाहिएँ, यह बाबा ने शक्ति बहुत दी। (क्रमशः)

‘पत्र’ संपादक के नाम

अगस्त, 2016 अंक में ‘संगीत का असर’ इस सुंदर लेख द्वारा उमंग-उत्साह बढ़ाते हुए मुख रूपी बाजे को ठीक रखने के लिए चार बातें बताई गई हैं – 1.कम बोलो 2.धीरे बोलो 3.मीठा बोलो और 4.सोच-समझ कर बोलो। तोल-मोल के बोल मधुरता से बोलने चाहिएँ, यही बात शिवबाबा ने हम बच्चों को प्यार से सिखायी है।

– ब्र.कु. लालजी भाई गोवेकर, मेहकर, महाराष्ट्र

मैंने पुस्तकालय में ज्ञानामृत पढ़ी। भावार्थ समझ में आया पर गूढ़ार्थ समझना नामुमकिन था। एक माह पूर्व मैंने राजयोग का साप्ताहिक कोर्स पूरा किया है। अब हर रोज़ मुरली सुनने सेवाकेन्द्र पर जाता हूँ। मुरली के द्वारा ज्ञान का झरना अविरत बहता जा रहा है और मैं उसमें गोते लगा रहा हूँ। ज्ञानामृत के लेख मानो शिवबाबा के द्वारा ही लिखे जा रहे हों, ऐसा प्रतीत होता है। लेखक और लेखिका भाई-बहनों को बहुत-बहुत धन्यवाद। बाबा आपको और अधिक लिखने की स्फूर्ति दें।

– ब्र.कु.सुरेश कुमार डी. गर्भे, मलकापुर (अकोला)

अगस्त, 2016 अंक के प्रथम पृष्ठ पर ‘रक्षाबन्धन – एक तात्विक विवेचन’ में त्योहार की कथा के साथ अच्छी जानकारी है। सम्पादकीय ‘धर्म और कर्म में सन्तुलन’ तथा प्रत्येक पृष्ठ पर प्रेरणादायक स्लोगन जीवन जीने की कला सिखाते हैं। प्रश्न हमारे उत्तर दादी जी के बहुत अच्छे हैं। बावन वर्ष का प्रकाशन स्वयं सफलता की कहानी कह रहा है। बाबा की बातें जीवन में उतारने पर सफलता स्वत: मिलेगी।

– अंजनी रस्तोगी, बदायूँ (उ.प्र.)

अगस्त अंक के अंतिम पृष्ठों पर ‘आध्यात्मिकता – सच्ची धर्म निरपेक्षता’ लेख पढ़ा। बहुत अच्छी जानकारी इस लेख के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाई गई है। मैं लेखिका को धन्यवाद देता हूँ। उन्होंने समयानुकूल आवाज़ बुलंद की है। धर्म के सार को समझने का सुझावपूर्ण लेखन किया है, यह बहुत महत्त्वपूर्ण एवं सारगर्भित है। आपसी वैमनस्यता, भेदभाव, धर्म की कट्टरता की ओर उन्होंने बड़ा अच्छा संकेत किया है – ‘‘ये पेड़, ये शाखें, ये पत्ते भी परेशान हो जायें गर ‘परिंदे’ भी हिंदू और मुसलमान हो जायें।’’ बहुत-बहुत धन्यवाद-साधुवाद।

– दुलीचंद संजय कुमार जैन, अरजुनी, रायपुर

सितम्बर अंक का सम्पादकीय ‘देने वाला है देवता’ मन को छूने वाला रहा। हम दैवी संस्कृति की उपज हैं। देवता माना देने वाला। ब्राह्मण वही है जो लेता कम और देता ज्यादा है। शुभ वायब्रेशन देना है, सहयोग देना है, मास्टर दाता बनना है। देना वास्तव में देना नहीं, लेना होता है। दिया हुआ वापस लौटेगा। लेने की भावना लालची बना देती है। इसके लिए छोटी-सी कहानी के द्वारा दृष्टांत बहुत अच्छा दिया गया है। इसके साथ ही ‘प्रतिशोध नहीं, आत्मशोध’ लेख मार्गदर्शक रहा। नाटकीय रीति से प्रतिशोध की भावना को परिवर्तन की राह दिखाकर, आत्मशोध में लगाकर इसमें शुभ भावना का महत्व बहुत सुंदर ढंग से बताया गया है। हम किसी से बदला न लेकर खुद बदलकर दिखायें। द्वारपाल के जीवन में जो परिवर्तन आया, वह परिवर्तन सबमें आ जाये, यह इस लेख का सन्देश है। आदरणीय भ्राता रमेश जी के लेख ‘संविधान’ से भिन्न-भिन्न देशों के संविधान तथा हर देश द्वारा संविधान का उपयोग करने की विधि की जानकारी मिली। अच्छा लगा।

– ब्रह्माकुमारी रत्ना, शाहबाद (कर्नाटक)

विश्व में अद्भुत और अनोखा प्रशिक्षण केन्द्र है ब्रह्माकुमारी संस्थान

जस्टिस भ्राता रविन्द्र सिंह, अध्यक्ष, विधि आयोग, लखनऊ (उ.प्र.)

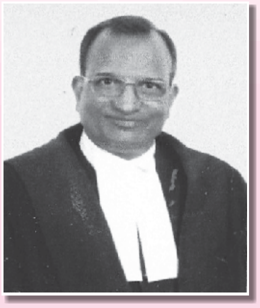

मुझे सितम्बर, 2016 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू स्थित ज्ञानसरोवर में स्पार्क विंग के राष्ट्रीय सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में और शान्तिवन परिसर में आयोजित मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में वक्तव्य देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इलाहाबाद हाईकोर्ट में मैंने अपने कार्यकाल में 1 लाख, 37 हजार, 778 मुकदमों का फैसला सुनाया। मेरे द्वारा एक साल के दौरान 30,000 मुकदमों का फैसला किया गया और 29,700 मुकदमे खारिज भी किये गए। इसलिए वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर जज के रूप में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में मेरा नाम भेजा गया है। मुझे कई बार एसोसिएशन्स एवं न्यूज चैनलों द्वारा भी सम्मानित किया गया है। मुझे माननीय राज्यपाल जी द्वारा 13 मई, 2016 को विधि आयोग उत्तर प्रदेश का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। मेरा एक पुत्र शिवम यादव इलाहाबाद हाईकोर्ट में और दूसरा रमन यादव सुप्रीम कोर्ट दिल्ली में वकालत करता है।

मैंने माउण्ट आबू में आकर पाया कि ब्रह्माकुमारी संस्था के लोगों में बहुत प्यार, नि:स्वार्थ स्नेह, अपनापन, दिव्यता और हरेक में देने की ही भावना है। यहाँ लोगों में धार्मिकता कूट-कूट कर भरी हुई है। यहाँ के सुरम्य वातावरण की अद्भुत शान्ति, शुद्धता और स्वच्छता देखते ही बनती है। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा देश-विदेश के लोगों को ऐसा अनोखा और अद्भुत प्रशिक्षण दिया जाता है जो आम आदमी की सोच से परे है। मुझे यहाँ तीन दिवसीय राजयोग सत्र में शामिल होने का और पाँच दिवसीय प्रवास का सुनहरा मौका मिला। यहाँ मैंने अनुभव किया कि मुझे अपने अन्दर बहुत गहराई से आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है। जब तक हमने यह नहीं सीखा, तब तक स्वयं में और समाज में बदलाव की कल्पना करना बेकार है।

राजयोग – आत्म-निरीक्षण का उत्तम तरीका

हमें अपने मन का सदुपयोग कैसे करना है, क्या सोचना है, क्या नहीं सोचना है, मन कैसे हल्का रखना है, मन की शक्ति कैसे जमा करनी है, मन को किस दिशा में ले जाना उचित है, इस प्रकार मन की ट्रेनिंग, मुख से किस तरह से अच्छे शब्दों का प्रयोग कर लोगों का दिल जीत सकते हैं, आशीर्वाद ले सकते हैं, बोल की शक्ति का महत्व क्या है, इस रीति से बोलने की ट्रेनिंग, आँखों से क्या देखें, क्या न देखें, सबके प्रति कैसा दृष्टिकोण अपनायें, इस प्रकार देखने की ट्रेनिंग, कानों से क्या सुनें, क्या न सुनें, व्यर्थ और बुरी बातों का हमारे जीवन पर क्या असर पड़ता है, इसकी ट्रेनिंग, बुद्धि में क्या विज्वलाइज करें, क्या विज्वलाइज न करें, बुद्धि परमात्मा की तरफ कैसे ले जाएँ, बुद्धि द्वारा परमात्मा की शक्ति कैसे ग्रहण करें, बुद्धि का शुद्धिकरण कैसे करें, इसकी ट्रेनिंग, अपने संस्कारों को किस विधि से अच्छे से अच्छा बनाया जा सकता है, इसकी ट्रेनिंग, इंसान को देवता बनाने की ट्रेनिंग, सभी तरह के लोगों को आपस में मिलाने की ट्रेनिंग, ये सब अगर कहीं दी जाती हैं तो सिर्फ ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में। यहाँ की शिक्षा सबको अच्छे से अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देती है। मेरे अनुभव से आत्म-निरीक्षण करने के लिए राजयोग सबसे सहज, सरल और उत्तम तरीका है जो हर वर्ग के लिए बहुत जरूरी है। मैं ब्रह्माकुमारी संस्थान का दिल से आभार व्यक्त करता हूँ। ❖

माथे पर हाथ रख बाबा ने कहा, बच्चे, सो जाओ

ब्रह्माकुमार लखपति कछवाहा, फल एवं सब्जी विक्रेता संघ अध्यक्ष एवं समाजसेवी, रीवा (म.प्र.)

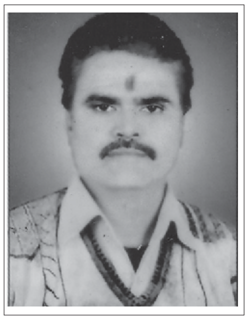

अपनी दास्तान 14 वर्ष की उम्र से प्रारंभ कर रहा हूँ, स्कूल की पढ़ाई के समय ही कुसंग के कारण दुर्व्यसनों के चक्र में पड़ गया। बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, गांजा, भांग, शराब मेरे जीवन-साथी बन गए।

व्यसन बन गए आदत

मैं नशा भले ही करता था लेकिन पाप कर्मों से दूर रहता था और प्रार्थना करता था कि हे परमात्मा, मैं व्यसनों के गहरे कुएँ में गिर पड़ा हूँ, मुझे निकालो। मैं दलदल में इतना फँसा हुआ था कि कोई इन्सान तो निकाल ही नहीं सकता था। परिवारजन व रिश्तेदार भी परेशान थे परन्तु क्या करता, व्यसन आदत में आ चुके थे। नशे की आदत इतनी हो गई थी कि नाश्ते के साथ ही शराब पीना शुरू हो जाता था, फिर दिन भर भी पीता रहता था। नशे के कारण भोजन कम हो गया तथा पेट की कई प्रकार की बीमारियाँ हो गईं। रात्रि को हर दो घंटे बाद शराब का नशा उतर जाता था तो पुन: शराब पीने के बाद ही नींद आती थी इसलिए रात्रि को 4-5 बार शराब पीता था और इस कारण चैन की नींद गुम हो गई। मैंने सोच लिया था कि व्यसन मेरे जीवन से नहीं छूट सकते, अन्त तक साथ चलेंगे ही।

दान देने की आदत

मेरी कमाई का 60 प्रतिशत हिस्सा प्रतिदिन के व्यसनों में खर्च होता था। मैंने कई बार प्रतिज्ञा की, मंदिरों में अनुष्ठान किया, पवित्र तीर्थों में जाकर शराब की बोतलें फेंक आया, गुरुओं को वचन दिया, पत्नी के सामने प्रतिज्ञा की लेकिन शराब व व्यसनों ने पीछा नहीं छोड़ा। हार मान चुका था कि मैं तो शराबी ही रहूँगा। मेरे जीवन में एक अच्छी बात यह थी कि 10 वर्ष की उम्र से ही गरीबों को दान करने, मदद करने का बहुत शौक था। यदि भोजन पर बैठा और कोई भिखारी आ गया तो परोसी हुई थाली ही दान कर देता था। मेरे घर से आज तक कोई भी खाली हाथ नहीं गया होगा। धार्मिक स्थलों तथा मंदिरों में जितने भी भण्डारे होते थे, मैं खुले रूप से उनको सब्जी एवं फलों का दान करता था। ईश्वर की ऐसी कृपा रहती थी कि जितना दान कर देता था उसका दुगुना-तिगुना भगवान मुझे दे देते थे इसलिए मैं दान देने में अपना सौभाग्य समझता था। कोई भी संस्था, चाहे वह किसी भी धर्म की हो, मैं सबको सहयोग देता ही था क्योंकि सेवा करने से, दान करने से बहुत ही खुशी व शान्ति का अनुभव होता था।

जुड़ गया आश्रम से

दस वर्ष पूर्व रक्षाबन्धन के दिन ब्रह्माकुमारी आश्रम की दो देवियाँ हमारी सब्जी मंडी में बाबा का सन्देश देने और हम लोगों को रक्षासूत्र बाँधने आईं। राखी बंधवाने के बाद बहनों को कुछ पैसे देने चाहे तो उन्होंने मना कर दिया और कहा, 'आप अपने अवगुण दान में दे दो।' मैंने कुछ बुराइयाँ व अवगुण छोड़ने का संकल्प किया और हाथ जोड़कर बहनों से एक निवेदन किया कि आपके आश्रम में सब्जी की जितनी भी जरूरत होगी, आज के बाद इस लखपति भाई की पूरी जवाबदारी रहेगी। इस प्रकार मैंने बाबा के घर में महीने में 8-10 बार सब्जियाँ भेजनी शुरू कर दीं और आश्रम से जुड़ गया। ज्ञानामृत पत्रिका भी नियमित पढ़ने लगा। पत्रिका पढ़कर आबू पर्वत जाने की बहुत ही तीव्र इच्छा जागृत हुई परन्तु कैसे जाना है, यह पता नहीं था।

दो व्यसन हर लिए बाबा ने

एक बार मई माह में अचानक आश्रम से बहनजी ने मुझे फोन कर दिया कि लखपति भाई, आपको आबू पर्वत जाना है और रिजर्वेशन हो चुका है। फोन सुबह 8 बजे आया, मुझे चिन्ता हुई कि इतना व्यसनी आदमी हूँ, कैसे मधुबन जा

पाऊँगा। सुबह फोन आने पर मैंने प्रतिज्ञा की कि आज से गुटखा नहीं खाऊँगा, सिगरेट नहीं पिऊँगा क्योंकि मधुबन जाना है। उस दिन के बाद मेरे ये दो व्यसन स्वत: ही बाबा ने हर लिये। अभी मेरे जीवन में एक बड़ा असुर बैठा था, वह था शराब का सेवन। दो व्यसन छोड़ने के बाद भी अंदर से बाबा से कहता था, ''हे बाबा, मेरे दो अवगुण आप की कृपा से दूर हो गये हैं, अब इसको भी छुड़ाओ।'' मधुबन जाने के दिन मैंने घर वालों से चर्चा की कि मुझे बिना शराब पीए नींद आती नहीं, अब मधुबन में क्या करूँगा? वह तो बाबा का घर है। फिर भी बाबा के ऊपर छोड़ कर, हिम्मत करके आश्रम के भाई जी के साथ आबू पर्वत चला गया। दिन भर तो ठीक रहा, सात्विक भाई-बहनों का साथ था, कोई दिक्कत नहीं हुई लेकिन रात्रि का आगमन मेरे लिए अतिशय संकट की घड़ी थी।

प्यार भरा स्पर्श बाबा का

रात्रि को 9 बजे भोजन आदि करके जैसे ही सोने का प्रयास करने लगा तो नींद ही नहीं आ रही थी। मैं परेशान हो गया कि क्या करूँ? साथ वाले सो चुके थे। करवटें बदलते, उठते-बैठते रात्रि के 12 बज गए। अन्त में मैंने बड़े ही करुणा भाव से बाबा से प्रार्थना की, **''हे बाबा, मैं आप के घर आया हूँ, मैं व्यसन त्याग करके आया हूँ, मुझे आपसे एक ही चीज चाहिए वह है चैन की नींद। प्लीज बाबा, मुझे आप चैन की नींद सुला दो।'' लगभग 10 मिनट बाबा को इसी प्रकार कहता रहा, फिर अनुभव किया कि प्यारे बाबा का कोमल स्पर्श मेरे मस्तक पर पड़ा। बाबा ने सिर पर हाथ फेर कर कहा, ''बच्चे सो जाओ।'' मैं चकित रह गया कि यह क्या हुआ लेकिन बाबा का स्पर्श इतना प्यार भरा था कि मैं 15 सेकेण्ड में ऐसा सो गया कि सुबह 6 बजे ही उठा।** इसके बाद दूसरे-तीसरे दिन तक भी बाबा के प्यार के अनुभव होते रहे। उस दिन के बाद आज तक कोई भी प्रकार का व्यसन नहीं करता हूँ। घर में व्यसनी रिश्तेदारों को प्रवेश नहीं करने देता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि जैसे मैं पापमुक्त हो गया हूँ तो पूरा संसार ही निर्व्यसनी और महान बने।

व्यसनों का सरगना बना प्रभु मुरीद

शहर में चर्चा हो गई कि लखपति ने सारे व्यसन छोड़ दिये हैं। यह जानकर हमारे समाज के लोग और सारे मित्र बाबा के घर से जुड़ गए हैं क्योंकि उन्हें बहुत ही सुखद आश्चर्य लगता है कि यह व्यसनों का सरगना कैसे प्रभु मुरीद बन गया, इसके ऊपर तो जरूर ही खुदाई रहमत बरस रही है। अन्त में सारे विश्व के भाई-बहनों से प्रार्थना करता हूँ कि आप बाबा के घर जाओ, ज्ञान प्राप्त करो, सेवा करो और पुण्य करो तो आपके ही नहीं, पूरे विश्व के सारे व्यसन दूर हो जाएँगे। यह कार्य परमपिता परमात्मा ब्रह्माकुमारी आश्रम से करा रहे हैं जिससे यह भारत पुन: सतयुग बन जायेगा, यह मुझे पूर्ण भरोसा है। उसके लिए ईश्वरीय परिवार की व प्यारे बाबा की दुआएँ सबसे अधिक लाभकारी हैं। जिसको बाबा की दुआएँ मिल जाती हैं वह तो रूहानी नशे में रह कर खुदाई खिदमतगार बन जाता है।

❖

क्रोध और हम..पृष्ठ 28 का शेष

कर देती है। आओ हम सभी मिल कर अपनी चेकिंग करें। सुबह उठते ही धारणा करें कि आज मुझे क्रोधमुक्त होने का प्रयास करना है और रात को चेकिंग करनी है कि इस शत्रु को कितनी बार जीता है? माना आज 20 की बजाय 10 बार क्रोध आया तो 10 बार तो हमने जीत लिया। इस प्रकार प्रयास से धीरे-धीरे इस शत्रु को जीतना है। अगर फिर भी क्रोध आता है तो अपने आप को सज़ा दें। सज़ा में खाना-पीना छोड़ें अथवा वह वस्तु खाना छोड़ें जो आपको सबसे अधिक प्रिय है। साधना में बैठें। जो काम कठिन लगता है उसे करने के रूप में सज़ा अपने लिए निश्चित करें। **गुलाम बनने की बजाय इस गुप्त शत्रु को गुलाम बनाएं, घर से अशान्ति, दरिद्रता व रोगों को भगाएँ।** ❖

कर्मों की गुह्य गति – मेरा अनुभव – 2

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

प्यारे-प्यारे शिव बाबा ने हमें सृष्टि-चक्र का ज्ञान दिया है। उसके बारे में एक ही शब्द में बाबा ने कहा है, ड्रामा। ड्रामा शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जैसे, शेक्सपीयर ने लिखा है, यह सृष्टि रंगमंच है और हम सब पार्टधारी हैं। मैं भी एक अनुभव में बंध गया हूँ। मैंने नहीं समझा था कि मैं कभी इस प्रकार की बीमारी के अनुभव के अन्दर बंधायमान होऊँगा।

मेरी ड्रामा की कहानी 26 अप्रैल, 2016 को शुरू होती है, जिस दिन मैं अपने लौकिक घर में गिर गया। अंधेरी (मुम्बई) में स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल में पैर के फ्रैक्चर का ऑपरेशन हुआ। दो महीने तक हॉस्पिटल में ही रहा। वहीं से 10 जून, 2016 को आबू (शान्तिवन) में आ गया। मैंने समझा कि मैं अब बीमारी के प्रभाव से मुक्त हो गया हूँ। कसरत करके ठीक होने के लिए 9 अगस्त, 2016 को पुनः मुम्बई स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल में आया परन्तु यहाँ आने के बाद ड्रामा का दृश्य पलट गया और मैं पुनः बीमार हो गया।

अगस्त 11, 2016 को विचित्र बुखार आया। मेडिकल की भाषा में कुछ भी कह सकते हैं। डॉ. अशोक मेहता जी की भाषा में इन्फेक्शन हुआ था। लगभग 120 घण्टे तक शरीर से न्यारा होने का अनुभव हुआ, अचेतन जैसी स्थिति रही। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर मुझे हुआ क्या? परिणामस्वरूप मुझे अर्जेण्ट ट्रीटमेंट दिया गया। नामीग्रामी डॉक्टरों ने मिलकर मेरी बीमारी दूर करने के लिए दिन-रात बहुत मेहनत की। इस प्रकार से मेरे स्वास्थ्य में काफी सुधार हुआ। परिणामस्वरूप हिसाब-किताब में काफी फर्क महसूस हुआ।

मैं तो सोच रहा था कि कसरत आदि करके, तबीयत अच्छी बना करके आबू में आर्ट एण्ड कल्चर विंग की कान्फ्रेंस जोकि 9 सितम्बर, 2016 को शुरू है, अटेण्ड करूँगा, इसलिए ही 4 सितम्बर, 2016 को आबू जाने की टिकट कराई थी, जोकि कैंसिल करानी पड़ी। इसको कहा जाता है – ड्रामा की भावी।

ड्रामा की भावी को समझना बहुत कठिन बात है। ड्रामा की भावी के बारे में बहुत-सी रोचक कहानियाँ हमारे धर्म-ग्रन्थों में लिखी हुई हैं जैसे नल राजा का व्याख्यान, राजा हरिश्चन्द्र, उनकी पत्नी तारामति व पुत्र रोहिताश्व के भाग्य की कहानी आदि।

हम सभी जानते हैं कि महाभारत में दर्शाया गया है कि धृतराष्ट्र के निमंत्रण पर पाण्डु पुत्रों ने दुर्योधन के साथ जुआ खेला और वे अपना सर्वस्व हार गये। श्रीकृष्ण को जब पता पड़ा तब आकर उन्होंने पाण्डु पुत्रों को यही कहा कि नियति को तो मैं भी नहीं टाल सकता। साथ ही यह भी दर्शाया गया है कि श्रीकृष्ण का एक बेटा था, जिसका नाम अनिरुद्ध था, जिसका अपहरण राजकुमारी ऊषा ने किया, जोकि बाणासुर की बेटी थी। इसके कारण श्रीकृष्ण, बलराम दोनों से बाणासुर का 15 दिन युद्ध चला, साथ ही कौरव-पाण्डवों का भी 15 दिन जुए का खेल चला – ये सभी बातें कितनी विचित्रता लिये हुए हैं। आप ही सोचिये कि ये हम ही नहीं, संसार की आत्माएँ भी कहती हैं कि भगवान, बुद्धिमानों की बुद्धि है, मायावी स्वर्ण मृग व साधारण मृग में अन्तर समझ सकते थे, फिर रावण द्वारा सीता का अपहरण संभव ही नहीं होता। फिर भी लक्ष्मण ने मार्जिन रखी। एक रेखा अंकित कर, सीता को कहा था कि आप मेहरबानी करके इस रेखा को पार नहीं कीजियेगा। बाल्मिकी रामायण में इस प्रकार के बहुत सारे उत्साही प्रसंग हैं। यूँ तो अलग-अलग भाषाओं में लिखी हुई रामायण में बहुत-से ऐसे प्रसंग हैं, जोकि बाल्मिकी रामायण में नहीं मिलते हैं। बाल्मिकी रामायण के अनुसार विश्वामित्र, राम-लक्ष्मण को राजा जनक के पास ऐसे ही लेकर गये और वहाँ पर

पहचान कराके सम्बन्ध बंधाया। राम ने वहाँ रखे धनुष को उठाया जो उठाने से ही टूट गया। इस दृश्य को देखकर राजा जनक को लगा कि यह साधारण नहीं है, अवश्य ही कोई श्रेष्ठ व्यक्ति होगा। परिणामस्वरूप सीता की अन्य बहनों का विवाह भरत-शत्रुघ्न के साथ सम्पन्न हुआ, ये सभी रोचकता से भरपूर रहस्यमय कहानियाँ हैं। इन कहानियों पर विचार करने पर मालूम पड़ता है कि इनको समझने की बहुत ही आवश्यकता है।

हम भक्ति तो करते रहे परन्तु जो कर्म फल प्राप्त होता है, उस पर कभी ध्यान ही नहीं दिया, जिसके कारण कर्मों का हिसाब-किताब ऐसे ही बाकी रह गया। जिन श्रीराम-श्रीसीता व श्रीराधे-श्रीकृष्ण को हम अपना इष्ट देव समझते थे अर्थात् उस जैसा जीवन-चरित्र बनाने के लिए पुरुषार्थ करने में तत्पर रहते थे उसके बदले में श्रीराम और श्रीकृष्ण के मन्दिरों में सेवा-पूजा करने के लिए पुजारी बन गये, महंत बन गये। परिणाम क्या हुआ? पण्डितों ने अच्छी मेहनत की व हिन्दू धर्म के ग्रंथों के बारे में आम पब्लिक को अवगत कराया परन्तु प्रसंग तो प्रसंग ही रहते हैं, दृष्टांत तो आखिर दृष्टांत ही होते हैं।

इसी संदर्भ में मेरे व पिताश्री ब्रह्मा बाबा के बीच में हुआ एक उदाहरण, आप सबके साथ शेयर करना चाहता हूँ। सन् 1957 में मेरी लौकिक माता, जिनका नाम शांता था, की इच्छा हुई कि मैं पिताश्री ब्रह्मा बाबा को मुम्बई आने का स्पेशल निमंत्रण दूँ। मैंने माता जी से खुशी से कहा कि आपका संकल्प है तो अवश्य ही निमंत्रण दीजिये। माता जी के शुभ संकल्पों से पिताश्री ब्रह्मा बाबा को मुम्बई आने का निमंत्रण दिया गया तो पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने उस निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार करते हुए कहा कि मैं बच्चे के निमंत्रण पर अवश्य ही मुम्बई आऊँगा, साथ ही यह भी कहा कि मैं माता जी के निमंत्रण पर मुम्बई नहीं आ सकता। पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने दादा आनन्द किशोर से पत्र लिखवाया और टेलिग्राम किया कि बाबा चार महीने के लिए मुम्बई आ सकता है। बाबा का पत्र मिलते ही बाबा के रहने के लिए हमने एक फ्लैट साढ़े चार महीने के लिए बुक कराया। इस संदर्भ में दादी पुष्पशांता जी मुझसे थोड़ा-सा नाराज़ हो गई कि पिताश्री ब्रह्मा बाबा 15 दिन के एक्स्ट्रा किराये से नाराज़ होंगे। तब मैंने कहा कि ऐसी कोई बात नहीं है। आपके ज्ञान में भी है कि नाराज़ शब्द तो होता नहीं है। ड्रामा की भावी में क्या है, किसी को पता नहीं । इन्होंने पिताश्री ब्रह्मा बाबा को लिखा कि रमेश बच्चे ने लिखा है कि 15 दिन का किराया ज़्यादा जायेगा तो मेरा जायेगा, मैं बाबा को नुकसान नहीं होने दूँगा। बाबा ट्रेन से आए तो मैं स्टेशन से ठहरने के स्थान (फ्लैट) तक अपनी कार में लेकर गया। बाबा ने कहा – बच्चे को अपने पैसे का बहुत अहंकार है। मैं चार महीने से एक दिन भी ज़्यादा नहीं ठहरूँगा। मैंने बाबा की बातें सुनकर कहा – बाबा, ठीक है, देखें ड्रामा में क्या लिखा हुआ है, आप चार महीने रहेंगे कि साढ़े चार महीने रहेंगे, यह तो ड्रामा फाइनल करेगा। बाबा ने कहा – नहीं, ड्रामा फाइनल नहीं करेगा, मैं फाइनल करूँगा। ड्रामानुसार मैं चार महीने ही रहूँगा। बाबा ने चार महीने के बाद के दिन सोमवार की टिकिट मुम्बई से आबू के लिए कराई। तब भी मैंने बाबा से कहा – बाबा, चार महीने के बदले साढ़े चार महीने बाद की टिकिट बुक कराइये क्योंकि आगे का सारा कार्यक्रम साढ़े चार महीने का ही है।

ड्रामा अनुसार ऐसा बन गया कि दादा विश्व किशोर ने मुम्बई के नामीग्रामी डॉक्टरों से बाबा की मुलाकात का कार्यक्रम रखा और ड्रामानुसार वो ठीक चार महीने में सोमवार के दिन ही पूरा होना था। उसी के कारण मेरी लौकिक बड़ी बहन (डॉ. अनीला) ने रविवार को आकर पिताश्री ब्रह्मा बाबा का ब्लड (टैस्ट करने के लिए) लिया। सोमवार को मैं और विश्व किशोर दादा लैबोरेटरी में गए, वहाँ बाबा का ब्लड दिया, जिसकी रिपोर्ट अगले तीन दिनों में मिलने वाली थी अर्थात् रिपोर्ट गुरुवार को मिलनी तय हुई, इससे पहले नहीं हो सकती थी। हमने कहा, ठीक है, आप लिखकर दे दीजिये कि रिपोर्ट तीन दिन के बाद ही मिलेगी क्योंकि डॉक्टर ने कहा था कि रिपोर्ट आने के बाद

ही मैं चैक करके बाबा को जाने की छुट्टी दूँगा और उसी अनुसार उनकी दवाई आदि चलेगी। हम लोग लैबोरेटरी से सेवाकेन्द्र पर आये और बाबा को कहा कि रिपोर्ट गुरुवार को मिलेगी, इसके कारण आपको सोमवार की टिकिट कैंसिल करानी पड़ेगी। बाबा ने कहा – नहीं, टिकिट कैंसिल नहीं कराना, मुझे जाना है। दादा विश्व किशोर ने बाबा को कहा कि हम अभी आपको आबू नहीं ले जा सकते, आबू में कोई अच्छा अनुभवी डॉक्टर नहीं है, इसलिए रिपोर्ट आने के बाद, डॉक्टर की राय अनुसार हमको चलना पड़ेगा। साथ ही दादा विश्व किशोर ने बाबा को कहा कि अभी फ्लैट में 15 दिनों की अवधि बाकी है, हम रह सकते हैं। तब बाबा ने मुझे बुलाया और कहा – देखो बच्चे, ड्रामा की भावी। इसलिए मुरली में बाबा हमेशा हम सभी को सिखाते हैं कि बच्चे, ड्रामा बलवान है, बाप बलवान नहीं है। इस प्रकार से बाबा अगले सोमवार को आबू आए और हम सबको खुश करके गये। इस एकस्ट्रा मिले हुए एक सप्ताह में बाबा के साथ कई अच्छे-अच्छे अनुभव हुए।

विदेश यात्रा के समय पर सन् 1971 में भी बाबा ने हम बच्चों को कहा था कि बच्चे, आप जाइये, आपके लिए मैंने सब तैयारियाँ करा दी हैं, जैसे सिर्फ स्विच का बटन दबाना होता है, ऐसे ही सहज सब कार्य मैंने कर दिये हैं। हम छः भाई-बहनों की टीम ड्रामा की अचल भावी के ऊपर विश्वास रख करके चले। भारत सरकार ने प्रत्येक सदस्य के लिए मात्र 6 डॉलर स्वीकार किया था। चलते-चलते आगे सेवाएँ बढ़ती गईं। उसके आधार पर पूर्व और पश्चिम में एक-एक सेन्टर खुला। अमेरिका, कनाडा, जमैका में बाबा का मैसेज गया। होनोलूलू, हांगकांग में भी मैसेज गया। इसके फलस्वरूप हांगकांग में सेवाकेन्द्र की स्थापना हुई। ड्रामा की भावी के ऊपर हमारा विश्वास नहीं होता तो ठण्डी की अधिकता में सिर्फ 6 डॉलर में क्या हो सकता था? आज कोई कहे, 6 डॉलर में विश्व का चक्कर लगा कर आओ तो कोई भी तैयार नहीं हो सकता है। बाबा के ज्ञान के आधार पर हमें ड्रामा के ज्ञान पर विश्वास था। परिणामस्वरूप मात्र 6 डॉलर में मैं 4 महीने, डॉ. निर्मला 15 महीने, ऊषा, रोजी बहन और शील दादी 8 महीने, जगदीश भाई 14 महीने सेवा अर्थ वहाँ रहे। सब जगह ड्रामा अनुसार जो तैयारियाँ हुई थीं, उस अनुसार हमने सेवा की। इस प्रकार से ड्रामा की भावी को समझना बहुत कठिन है।

मैंने इस अनुभव को आपके साथ इसलिए शेयर किया कि आप भी ड्रामा और ड्रामा की भावी को सहज रूप से स्वीकार करके चलें तो सभी कार्य सहज ही अनुभव होंगे। इसको स्वीकार न करने के कारण बहुत सारी परेशानियों, कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ❖

श्रद्धांजलि

यज्ञ स्नेही, सदा सहयोगी आरणीय ब्रह्माकुमार मधु भाई जी, आदरणीय भ्राता रमेश शाह जी के मौसेरे भाई थे। दिनांक 26 सितम्बर, 2016 को प्रातः 11.50 पर आपने अपनी देह का त्याग कर बापदादा की गोद ली। आपने सन् 1952 से साकार बाबा एवं मम्मा की बहुत पालना ली। आप ईश्वरीय यज्ञ की सेवा में बहुत सहयोगी रहे। ईश्वरीय सेवा की शुरूआत से ही यज्ञ की खरीदारी की सेवा आपने उत्तम रीति से निभाई। बाबा-मम्मा और दादियों से घनिष्ठ सम्बन्ध होते हुए भी नम्रता, सादगी और मिठास आपके जीवन में भरपूर थी।

आपका ईश्वरीय मर्यादाओं से संपन्न एवं आदर्श कुमार जीवन हम सभी के लिये सदा-सदा प्रेरणादायी रहेगा। ऐसी महान त्यागी, तपस्वी आत्मा को पूरा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पशुपतिनाथ की धरती पर...

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

भगवान शिव का एक नाम पशुपतिनाथ भी है। पशु शब्द पाश से बना है। पाश का अर्थ है बन्धन। जो पाशों से बंधा हो उसे पशु कहा जाता है। पशु तो स्थूल बन्धनों से बंधा होता है परन्तु मानव आत्मा जब काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि सूक्ष्म बन्धनों से जकड़ी जाती है तब उसे इन बन्धनों से मुक्त करने वाले भगवान शिव ही हैं इसलिए उनका नाम पशुपतिनाथ पड़ गया जिसका अर्थ हुआ पशु की तरह बन्धन में बंधी आत्मा को मुक्ति दिलाने वाले स्वामी।

नेपाल में पशुपतिनाथ का बहुत प्रसिद्ध मंदिर है जहाँ देश-विदेश के हजारों लोग दर्शनार्थ आते रहते हैं। मंदिर के गर्भगृह में पंचमुखी शिवलिंग स्थापित है। शिवलिंग पर चारों दिशाओं में और ऊपर की तरफ भी एक चेहरा निर्मित है जिसका अर्थ है कि वे सब ओर से अपने भक्तों को निहाल करते हैं। देहधारी मनुष्य का तो फ्रन्ट पोज, बैक पोज, साइड पोज अलग-अलग होता है परन्तु भगवान शिव विदेही होने के नाते उनके सर्व पोज एक समान ही हैं। सारा मन्दिर चांदी से मढ़ा हुआ है और शाम की आरती के समय इसके चारों दिशाओं के चारों द्वार खोल दिये जाते हैं ताकि भक्त लोग सब तरफ से उनसे वरदान ले सकें।

मन्दिर के मुख्य द्वार के सामने दो नन्दीगण स्थापित हैं। एक बड़े रूप में और एक छोटे रूप में। नन्दी का अर्थ है आनन्दित करने वाला। भगवान शिव का वाहन बनने वाला कितना न भाग्यशाली और सभी के चित्त को हर्षाने वाला होगा! इसलिए नाम पड़ा नन्दी। यह नन्दी अथवा भागीरथ (भाग्यशाली रथ) कोई और नहीं, स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा ही हैं। धरती पर ईश्वरीय कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए भगवान शिव को दो मानवीय रथों का आधार लेना पड़ता है इसलिए दो नन्दीगणों का स्थापित होना उचित ही है।

श्री श्री पशुपतिनाथ मन्दिर के साथ ही बागमति नदी बहती है जिसके किनारे पर बने ऊँचे मंच पर शाम की आरती का दृश्य मन को प्रफुल्लित करने वाला होता है।

पशुपतिनाथ मंदिर, नेपाल

भगवान शिव की महिमा के गीतों से गायक और वादक दिल के तारों को झनझना देते हैं। इस सजीव संगीतमय वातावरण में हजारों श्रद्धालु ताल के साथ ताल मिलाकर झूमते हैं। अधिक आनन्द यह देखकर आया कि श्रद्धालुओं में अधिकतर 20 से 40 वर्ष की आयु के युवा भाई-बहनें थे। बुजुर्ग बहुत कम थे। युवाओं का यह शिव-प्रेम वास्तव में धर्म और संस्कृति का गौरव है। इसी अलौकिक प्रेम की बयार के मध्य मुझे भी परमपिता शिव परमात्मा के सत्य परिचय के सम्बन्ध में कुछ उच्चारण करने के लिए कहा गया। पढ़े-लिखे युवा श्रद्धालुओं को देखकर मेरे मन से विचार निकले कि **देवनागरी लिपि 'अ' से शुरू होकर 'ज्ञ' पर खत्म होती है जिसका स्पष्ट अर्थ है कि हम अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ते चलें। स्वयं को शरीर समझना सबसे बड़ा अज्ञान और स्वयं को आत्मा समझना सबसे बड़ा ज्ञान है।**

आरती की समाप्ति पर भेंट स्वरूप मिली रुद्राक्ष माला भी ईश्वरीय प्रेम और कर्त्तव्य की स्मृति दिलाने वाली रही। **रुद्राक्ष का अर्थ है (रुद्र + अक्ष) भगवान शिव की आँख अर्थात् उनकी आँखों में समाए हुए उनके लाडले बच्चे जो विश्व परिवर्तन के दिव्य कार्य में उनके सहयोगी बनते हैं।** माला को प्राप्त करके भगवान शिव के कर्त्तव्य को और भी तीव्रगति से आगे बढ़ाने और उनकी आँखों का तारा (बहुत

प्यारा) बनने का दृढ़ संकल्प मन में उत्पन्न हुआ।

काष्ठ मण्डप

नेपाल की राजधानी काठमाण्डु है। यहाँ एक ही लकड़ी से बने एक प्राचीन मन्दिर का नाम काष्ठ मण्डप था, जो 2015 में हुए भूकम्प के दौरान गिर चुका है। उसी के आधार पर काठमाण्डु नाम पड़ा है। इस शहर की आबादी लगभग 56 लाख है और यहाँ ब्रह्माकुमारीज की 50 से भी अधिक शाखाएँ सेवारत हैं। पहाड़ों के बीच की सुन्दर घाटी में बसे काठमाण्डु शहर को मन्दिरों का शहर माना जाता है। इसमें 2000 से भी अधिक मन्दिर हैं।

विश्वशान्ति पोखरी

शहर के बीचोंबीच बहुत ऊँचाई पर स्थित स्वयंभू मन्दिर का मुख्य आकर्षण वहाँ की विश्वशान्ति पोखरी (World Peace pond) है। इस गोलाकार पोखरी में पानी के मध्य महात्मा बुद्ध की खड़ी मूर्ति है जिसके वरदानी हाथ से जलधारा निरन्तर सामने रखे ग्लोब पर गिरती है। ग्लोब पर लिखा है विश्वशान्ति। शान्ति एक अमूर्त गुण है जो मानव के मन से प्रकम्पनों के रूप में सारे विश्व में फैलता है। इस बात को हाथ से निकलती हुई जलधारा के रूप में दर्शाया गया है। **परमात्मा पिता कहते हैं, बच्चे, आप जितना शान्ति के संकल्प निर्मित करेंगे और फैलाएंगे उतना विश्व शान्ति में आपका योगदान जमा होगा।**

भगवान शिव भाई के रूप में

रानी पोखरी नाम के स्थान पर स्थित शिव-मन्दिर साल में एक बार भैया दूज के दिन खुलता है। जिन बहनों के भाई नहीं होते वे उस दिन भगवान शिव को भाई के रूप में तिलक देने वहाँ जाती हैं। भगवान शिव संगमयुग में धरती पर आकर माता-पिता, बन्धु, सखा... आदि सर्व सम्बन्ध मानवात्माओं से निभाते हैं, यह मन्दिर इसी की यादगार है।

बूढ़ा नीलकण्ठ

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा, सन् 1937 में उनके तन में परमपिता परमात्मा शिव की प्रवेशता से पहले, जब अपने

बूढ़ा नीलकण्ठ

लौकिक जीवन में थे और हीरे जवाहरात का व्यापार करते थे तब व्यापारिक उद्देश्य से नेपाल आते रहते थे। हर बार वे काठमाण्डु स्थित बूढ़ा नीलकण्ठ मन्दिर में शेषशैय्या पर लेटे हुए विष्णु जी के दर्शन अवश्य करते थे। अपने भक्तिकाल में वे विष्णु के अनन्य भक्त तो थे परन्तु नारी जाति के प्रति अत्यन्त सम्मान के कारण उन्हें विष्णु जी की वही मूर्ति या छवि प्रिय होती थी जिसमें श्री लक्ष्मी जी उनके पाँव ना दबा रही हों। बूढ़ा नीलकण्ठ मन्दिर की मूर्ति ऐसी ही मूर्ति है जिसमें विष्णु जी अकेले ही जल के बीचोंबीच शेषशैय्या पर लेटे हुए दिखाए गए हैं। **परमपिता परमात्मा शिव ने हमें समझाया है कि श्री विष्णु, मानव का सर्वोत्तम लक्ष्य है। विष्णु समान दिव्य गुणवान बनने के लिए अपने भीतर मौजूद विष (काम, क्रोध आदि विकार) को अणु की तरह अदृश्य कर देना आवश्यक है।**

भारत में जहाँ कन्या-भ्रूण हत्या एक भयंकर सामाजिक समस्या के रूप में उभर कर सामने आई है और देश के प्रधानमन्त्री ने 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का नारा देकर कन्याओं की सुरक्षा और विकास को सुनिश्चित करने के लिए जनता का आह्वान किया है वहीं नेपाल में प्राचीन काल से, छोटी कुमारियों को जीवित देवी के रूप में पूजने, उनसे राजकार्य में मार्गदर्शन और आशीर्वाद लेने की प्रथा देखने को मिली। नेपाल भारत की तुलना में गरीब है। भारत का 1.00 रुपया, नेपाल के एक रुपये 60 पैसे के

बराबर है। नेपाल में कन्या भ्रूण-हत्या जैसी समस्या नहीं है।

कुमारी पूजा

नेपाल में कुमारी पूजा का प्रारम्भ आज से 1437 वर्ष पूर्व हुआ माना जाता है। लिछवी वंश के राजा गुणकामदेव ने कुमारी कन्या पूजा की धार्मिक प्रथा को विधिवत् रूप प्रदान किया। इतिहास में वर्णित है कि बाद में सन् 1324 में मल्ल राजाओं ने तुलजा भवानी को अपनी इष्ट देवी के रूप में स्वीकार किया। उनके पास एक शक्तिशाली तान्त्रिक यन्त्र था जिससे वे देवी के साथ व्यक्तिगत बातचीत करके राज्य कारोबार के विषय में मार्गदर्शन लेते थे। एक बार राजा त्रैलोक्य मल्ल की सुपुत्री गंगा देवी ने उस यन्त्र को खोला और उसकी झलक ले ली। किसी महिला के द्वारा यह यन्त्र देखना निषेध था। इस कारण देवी ने राजा से कहा, आज के बाद मैं आपसे व्यक्तिगत बातचीत नहीं करूँगी। मैं एक कुमारी का रूप धारण करके आपको सलाह देती रहूँगी। आप शाक्य परिवार में से किसी छोटी कुमारी को चुन लें, ऐसा कहकर देवी अदृश्य हो गई।

यह माना जाता है कि बच्चे का हृदय हर प्रकार की विकृति (क्रोध, धोखा, चालाकी आदि) से मुक्त होता है। तब से शाक्य वंश की एक छोटी कुमारी (3-6 वर्ष) को उसके माता-पिता की अनुमति से जीवित देवी बनाने की प्रथा चलती आ रही है। इस जीवित देवी के 11 वर्ष की होने के बाद नई कुमारी का चुनाव किया जाता है और उसके देवी बनने की घोषणा महाअष्टमी के दिन की जाती है। सन् 1757 में देवीकुमारी के लिए अलग घर का निर्माण करवाया गया। इस सम्बन्ध में भी इतिहास में वर्णन आता है कि अन्तिम मल्ल राजा, जयप्रकाश मल्ल को श्रीकुमारी स्वप्न में दिखाई दी और कहा, हे राजा, आपका राज्यकाल पूरा होने वाला है परन्तु यदि आप मेरे रहने का एक स्थाई घर बनवाने का और मेरे नाम पर रथ-यात्रा उत्सव शुरू करने की प्रतिज्ञा करें तो मैं आपके राज्यकाल को 12 वर्ष तक बढ़ा दूँगी। तब राजा ने कुमारी घर का निर्माण करवाया और एक रथ-यात्रा उत्सव का प्रारम्भ भी करवाया जो अभी तक चलता आ रहा है और देवी के

कुमारी पूजा

कथन अनुसार राजा ने अगले 12 वर्षों तक राज्य कारोबार को सम्भाला। जो कुमारी देवी रूप का कार्यकाल पूरा कर लेती है उसे नेपाल सरकार, उसकी 21 वर्ष की आयु होने तक 300/- प्रतिमास भत्ता देती है। सार रूप में, नेपाल की रक्षा करने वाले अनेक देवी-देवताओं के मध्य श्रीकुमारी भी सबकी रक्षा करने का महत्त्वपूर्ण रोल अदा करती है।

मुझे भी जीवित देवी कुमारी के दर्शनों का सौभाग्य मिला। **परमात्मा पिता ने सृष्टि परिवर्तन के कार्य में पवित्र कुमारियों को निमित्त बनाकर देवी रूप में संसार के सम्मुख उन्हें सम्मानित स्थान दिया। उसकी यादगार रूप में कुमारी पूजन की प्रथा चली आ रही है।** नेपाल में कुमारी को देवी रूप में सम्मानित स्थान देकर राजा (वर्तमान समय राष्ट्रपति तथा अन्य राजनैतिक नेता और अधिकारीगण) अथवा प्रजा द्वारा उससे मार्गदर्शन और आशीर्वाद लेने की प्रथा भी उसी से प्रेरित प्रथा है। आइये, हम कन्या भ्रूण-हत्या या कन्या को बोझ मानने की मानसिकता का त्याग करें और कन्याओं को देवी रूप में सम्मानित पद देकर ईश्वरीय कर्त्तव्य में मददगार बनें।

पशुपतिनाथ की धरती पर सेवा में व्यतीत हुए ये 13 दिन बहुत कुछ सिखाने वाले और **'तेरा, तेरा'**, **'सब कुछ तेरा'** यह पाठ पक्का कराने वाले सिद्ध हुए। इस सेवा के निमित्त बनने वाले सभी को हार्दिक आभार। ❖

जब मिला बाबा की उपस्थिति का प्रमाण

ब्रह्माकुमार विनोद पाण्डेय, नागौद (सतना) म.प्र.

कहते हैं कि यदि सच्चे दिल से परमात्मा को याद करो तो वह अपने बच्चों की मदद के लिए दौड़े चले आते हैं। बाबा का यह कमाल मैंने बहुत अच्छी तरह देखा। मैं जिला चित्रकूट (उ.प्र.) का पुश्तैनी निवासी हूँ और नागौद के एक अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में शिक्षक के पद पर कार्यरत हूँ। मेरी लौकिक बहन बहुत पहले से ब्रह्माकुमारीज के ईश्वरीय ज्ञान से जुड़ी हैं और जब भी मैं उनके पास जाता हूँ, वे शिवबाबा का ज्ञान जरूर सुनाती हैं।

एक क्षण में हुआ बाबा पर विश्वास

एक दिन मेरी युगल ने बताया कि पड़ोस में ही ब्रह्माकुमारीज का सेवाकेन्द्र खुला है, मैं आज वहीं से होके आ रही हूँ और फिर वे बाबा के ज्ञान की बातें बताने लगी। इसके बाद वे नित्य सेवाकेन्द्र में जाने लगी और घर आकर मुझे ज्ञान बताने लगी, मुझे बड़ा अच्छा लगने लगा। मैंने कहा, क्या मैं भी वहाँ जा सकता हूँ, निमित्त बहन से पूछ कर आना। सेवाकेन्द्र की बहन ने स्वीकृति दे दी तो दूसरे दिन से मैंने सात दिन का कोर्स किया और रोजाना जाकर बाबा की मुरली का आनन्द लेने लगा। यद्यपि भक्तिमार्ग में मैंने रामायण, गीता व अन्य बहुत से धार्मिक ग्रन्थ पढ़े हैं लेकिन जो आनन्द, सुख व शान्ति की अनुभूति बाबा की मीठी मुरली से हुई वह उन धार्मिक ग्रन्थों से नहीं। मुझे बाबा पर विश्वास एक क्षण में हो गया।

रवाना हुए वापसी के लिए

बाबा हर क्षण अपने बच्चों की मदद के लिए साथ निभाते हैं, यह मैंने उस दिन देखा। घटना 15 नवम्बर, 2014 की है। हमारे विद्यालय के सभी शिक्षकों और छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण दल, विद्यालय की ही चार बसों में कलिंजर के ऐतिहासिक किले में जाने को रवाना हुआ। यह ऐतिहासिक किला कलिंजर के ऊँचे पर्वत की चोटी पर स्थित है। वहाँ पर नीलकंठ नाम की बहुत प्राचीन शिवलिंग की प्रतिमा है। लगभग डेढ़ घंटे में सभी वहाँ पहुँच गये। शिवलिंग के दर्शन किये और किले का भ्रमण किया। सभी बच्चे कुछ समय वहाँ खेले, कूदे, मौज-मस्ती की फिर घर वापसी के लिए रवाना हुए।

ढलान पर हुआ ब्रेक फेल

सबसे पहले एक बस में, जिसमें लगभग 80-90 छोटे-छोटे बच्चे बैठे थे, मुझे बैठने को और घाटी उतर कर नीचे रुकने को कहा गया। प्राचार्य के निर्देशानुसार हमारी बस आगे बढ़ी लेकिन जैसे ही घाटी की ढलान शुरू हुई, बस का ब्रेक फेल हो गया। ड्राइवर ने जैसे ही बताया, सारे बच्चे चिल्लाने लगे। सामने हजारों मीटर गहरी खाई। अब क्या होगा! कुछ सूझ नहीं रहा था। मैं गेट के बगल की सीट पर बैठा था, गेट पर एक सहायक और एक अतिरिक्त ड्राइवर खड़े थे। बस की गति धीमी थी। मैंने उन दोनों को बस से कूदकर दो पत्थर पहियों में अड़ाने को कहा। उन्होंने वैसा ही किया लेकिन फिर भी बस नहीं रुकी। तो यह निश्चित हो गया कि आज कोई नहीं बचेगा।

बाबा मदद करते हैं हजार हाथों से

उसी समय अचानक मेरे मुँह से निकला, बाबा, बस रोको न, क्या कर रहे हैं, आप साथ हैं न। मेरा इतना कहना हुआ कि सामने दो बड़े-बड़े पत्थर रोड में ही पड़े दिखाई दिये जैसे कि बाबा ने ही उन्हें फेंक दिया हो। बस फिर क्या? मैंने आवाज लगाई, वो बड़े-बड़े पत्थर पहियों में अड़ाओ। ड्राइवर ने भी हिम्मत नहीं हारी, उसने भी बस को एक तरफ सटाए रखा। इस तरह उन पत्थरों की ओट लगते ही बस रुक गई। सभी की रुकी हुई सांसें जैसे फिर से चलने लगी। मेरे मुँह से निकला – वाह बाबा, वाह! उस दिन से मुझे विश्वास हो गया कि यदि बाबा के साथ का हम अनुभव करते हैं और दिल से बाबा को याद करते हैं तो वह अपने बच्चों की मदद हजार हाथों से करते हैं। ❖

हम सभी अपने जीवन में जाने-अनजाने भय से रूबरू होते हैं। कभी यह ज्ञात का भय होता है तो कभी अज्ञात का। हम अपने भय से निजात पाना चाहते हैं। भय को भगाने के लिए सबसे पहले स्वयं का आत्म विश्लेषण करें कि हमारे डर का कारण क्या है। जब हम अपने डर का कारण समझ जाते हैं तो हमारे लिए उसका सामना करना आसान हो जाता है।

भय के कारण

कई बार हमारे मन का डर अतीत में हुई किसी पुरानी घटना की वजह से भी जन्म लेता है। उदाहरण के लिए, अगर भूतकाल में कभी आपको कुत्ते ने काटा हो तो कुत्ते को देखते ही मन की स्मृति की पुरानी फाइल सामने आ जाती है और भय सताता है। कुछेक बार भय का कारण किसी व्यक्ति से विशेष लगाव हो सकता है जिस कारण उसे खो देने का भय हमें सताता है। डर का कारण भूतकाल में जाने-अनजाने किये गये पापकर्म भी हो सकते हैं जो वीभत्स रूप में वर्तमान में हमारे सामने आकर हमें डरा रहे हों।

ये हमारे डर ही हैं जो हमें कमजोर बनाते हैं। अकेले होने का डर, जोखिम लेने का डर, कुछ छूट जाने का डर, जिम्मेवारी का डर, असुरक्षा का डर, मृत्यु का डर, सामना करने का डर आदि भय के अन्य अनेक कारण हैं। जब तक हम इन भयों से पूरी तरह मुक्त नहीं होंगे तब तक हमारा विकास नहीं हो सकता और तब तक हम दूसरों की नजरों में भी अपना खास स्थान नहीं बना पायेंगे।

एक शोध के अनुसार लोगों के 99% डर बेवजह होते हैं। यदि उनके लिए सही कदम उठाया जाये तो मुक्ति संभव है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार – भय से ही दुख आता है, भय से ही मृत्यु होती है और भय से ही अनेक बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं।

भय के कुप्रभाव

अगर हम भय को अपने जीवन में स्थान देते हैं और उसे अपनी जिन्दगी को चलाने देते हैं तो यह एक भयानक स्थिति बन जाती है जो रोगों को जन्म देती है। यदि हम किसी भी रोग के कारण की खोज करें तो दो ही कारक मिलेंगे – तनाव और भय।

अस्सी के दशक में एक अपराधी के साथ एक प्रयोग किया गया। उसके सामने एक घोड़े को लाया गया और कहा गया कि यह जैसी मौत मरेगा, वैसे ही आप भी मरेंगे। घोड़े को कोबरा साँप से कटवाया गया, वह तड़प-तड़प कर मर गया। व्यक्ति ये सब ध्यान से देख रहा था। फिर उसकी आँखों पर पट्टी बाँधी गई। उसे कटवाया गया लेकिन कोबरा से नहीं, चूहे से, उसने भी वैसे ही तड़पना शुरू कर दिया। जितने समय में घोड़े ने शरीर छोड़ा, ठीक उतने ही समय बाद उसने शरीर छोड़ दिया। हैरानी की बात थी कि जब दोनों के खून की जाँच की गई तो दोनों के शरीर में समान जहर पाया गया। इससे स्पष्ट है कि भय का शरीर पर किस कदर कुप्रभाव होता है।

चिकित्सकीय खोजों से यह बात सिद्ध हो गई है कि मन का शारीरिक क्रियाओं पर प्रबल प्रभाव पड़ता है। यदि

आपका मन शांत है और विश्वास से भरा है तो यदि आप रोगी भी हैं तो भी आपके रोगमुक्त होने के पर्याप्त अवसर हैं किंतु यदि आपका मन भय अथवा चिंता से ग्रस्त है तो आप स्वस्थ रह ही नहीं सकते। भय न केवल आपको शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी कमजोर बना देता है। जिस पल आप अपने को भयमुक्त बनाने की कोशिश शुरू कर देते हैं, उसी समय आपकी सेहत दुरूस्त होने लगती है, आपका मन मजबूत बनने लगता है।

वह व्यक्ति जीवन का पहला सबक भी नहीं सीख पाता जो हर रोज अपने डर को जीत नहीं लेता। किसी ने बहुत अच्छा कहा है – भले हम तूफानों से घिरे हैं पर किनारे पर खड़े उन हजारों लाखों लोगों से अच्छे हैं जिन्होंने सागर को पार करने की हिम्मत ही नहीं की।

तू रख यकीं बस अपने इरादों पर,
तेरी हार तेरे हौंसलों से बड़ी तो नहीं होगी।

भय का सामना कैसे करें ?

यदि भय हमारे जीवन को पंगु बनाता है और रोगों को जन्म देता है तो आवश्यकता है कि हम भय को भगायें। भय के भागते ही आपका संपूर्ण व्यक्तित्व रूपांतरित हो जायेगा, आप स्वयं को ऊर्जावान अनुभव करेंगे तथा दूसरों की नजरों में भी स्वयं के लिए सम्मान का अनुभव करेंगे। प्रश्न उठता है कि भय को कैसे भगायें। भय से भागना नहीं है लेकिन उसे भगाना है। भय पर जीत पाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम भय के प्रति अपनी सोच को बदलें। हम अपना ध्यान संभावित अनिष्ट (नकारात्मकता) से हटाकर बलिष्ठ (सकारात्मकता) की तरफ लगायें। हर घटना के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलू होते हैं। कहते हैं, दूध के फटने से वो लोग उदास हो जाते हैं, जिन्हें पनीर बनाना नहीं आता। हम सकारात्मक सोच रखें। इसके बाद हमारे लिए सच्चाई को समझना और अपनी आत्मछवि सुधारना सहज हो जायेगा।

जिस चीज से डर लगता है, उसका सामना करें।

FEAR हमें क्या कहता है – Face Everything And Rise. अगर हमें स्वयं को ऊँचा उठाना है, आगे बढ़ाना है तो अपने अंदर के डर से मुक्ति पानी ही होगी। डर से पार पाना नामुमकिन नहीं बल्कि बहुत आसान है। बस इसके लिए थोड़ी सी हिम्मत जुटाने की जरूरत है।

मुझे याद है, बचपन में मैं बहुत संकोची थी। कक्षा में अध्यापक कोई प्रश्न पूछते तो मैं खड़े होकर उत्तर देने में भी हिचकिचाती थी। एक बार स्कूल की प्रार्थना सभा में हमारे हिन्दी के अध्यापक ने हिन्दी का कोई प्रश्न पूछा, किसी ने हाथ खड़ा नहीं किया। बाद में उन्होंने कहा कि जो विद्यार्थी इस प्रश्न का सही जवाब देगा, मैं उसे इनाम दूंगा। मुझे उस प्रश्न का उत्तर आता था लेकिन अपने संकोची स्वभाव तथा इस डर के कारण कि अगर मेरा उत्तर गलत हुआ तो सब मुझ पर हँसेंगे, मैंने हाथ खड़ा नहीं किया। हमारे अध्यापक ने कहा कि बड़े दुख की बात है कि किसी को इस प्रश्न का उत्तर नहीं आता। फिर उन्होंने उसका उत्तर बताया, मेरा सोचा गया उत्तर सही था। उस समय मुझे बहुत दुख हुआ कि मैंने हाथ क्यों नहीं खड़ा किया। उसी समय मैंने स्वयं से प्रतिज्ञा की कि मैं भविष्य में कभी भी संकोच नहीं करूंगी। हर बात में आगे रहूंगी। उसके बाद जब भी किसी कार्य को करने के लिए पूछा जाता, भले वह कार्य मुझे ना भी आता हो, मैं सबसे पहले हाथ खड़ा करती। इस प्रकार अपने भय का मैंने सामना किया और उससे मुक्ति पाई और इससे मुझे आगे बढ़ने में बहुत मदद मिली। मेरे

व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास हुआ।

जीवन में सबसे ज्यादा उदासी से भरे ये शब्द हो सकते हैं – काश, मैंने किया होता, मैं कर सकता था, मुझे करना चाहिए था, मैंने क्यों नहीं किया।

जीवन में एक भय लोगों का भी होता है। लोग क्या कहेंगे। लोगों के भय से हम सही कार्य को करने से भी डरते हैं। हम अपनी अंतरात्मा की आवाज को दबा देते हैं। किसी ने बहुत अच्छा कहा है, जीवन का सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग। आप चाहे अच्छा करो या बुरा, लोग हर हालत में बोलेंगे ही, इसलिए लोगों के बोलने की चिंता न करके, आपको जो सही लगता है, वही करें।

निर्भय बनने में आध्यात्मिकता की भूमिका

डर को भगाने में आध्यात्मिकता बहुत सहायक हो सकती है। आध्यात्मिकता हमें बताती है कि मैं कौन हूँ। मैं अजर, अमर, अविनाशी चैतन्य आत्मा हूँ, शरीर तो मेरा वस्त्र मात्र है, इस स्मृति से मृत्यु का भय निकल जाता है।

दूसरा, आध्यात्मिकता हमें बताती है कि मेरा कौन है। मेरा सच्चा पिता सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव है जो हर पल मेरे साथ है, वही मेरा सच्चा रक्षक है। यह स्मृति भी भय को भगा देती है। वास्तव में डर विश्वास के विपरीत है। जब हम डरते हैं तो हम भगवान को यह संदेश देते हैं कि हम उस पर विश्वास नहीं करते।

एक गुरु और शिष्य जंगल से होकर गुजर रहे थे। अचानक सामने से शेर आ गया। शिष्य डर के मारे पेड़ पर चढ़ गया। गुरु वहीं खड़ा होकर परमात्मा को याद करने लगा। शेर कुछ देर तक तो गुरु को देखता रहा, फिर चुपचाप वापिस चला गया। शेर के जाने के बाद शिष्य थर-थर काँपता हुआ पेड़ से उतरा और फिर दोनों चल पड़े। कुछ दूर जाने के बाद गुरु की गाल पर एक मच्छर ने काटा। गुरु जोर से चीखा। शिष्य ने पूछा, क्यों महाराज, तब तो शेर के आने पर भी नहीं डरे, अब एक छोटे से मच्छर ने काट लिया तो इतना जोर से चीख रहे हो। गुरु ने कहा, मूर्ख, उस समय तो मैं भगवान के साथ था, अब तेरे साथ हूँ।

इस प्रकार जब हम परमात्मा को साथी बनाते हैं तो बड़ी से बड़ी मुसीबत भी टल जाती है। निर्भय बनने में परमात्मा का साथ और स्मृति हमारी बहुत मदद करती है। परमात्मा की स्मृति एक कवच की भाँति हर विपरीत परिस्थिति में हमें सुरक्षित रखती है।

तीसरा, आध्यात्मिकता हमें बताती है कि जो हुआ, अच्छा हुआ, जो हो रहा है, अच्छा हो रहा है तथा जो होगा वो भी अच्छा होगा। इस सृष्टि रंगमंच का हर क्षण कल्याणकारी है, हर आत्मा अपना पार्ट अच्छी तरह बजा रही है। यह स्मृति भी भय से निजात पाने में मदद करती है।

भय को अपना भाग्य मत बनाइये। निर्भीकता में जादू है। इस जादू को अपने जीवन में चलने दीजिये। ❖

छलक जाते थे खुशी के आँसू

ब्रह्माकुमार एन.सी.परेवा, जहाँगीर पुरी, दिल्ली

जुलाई, 2015 में मुझे बाएं पाँव में असहनीय दर्द होने लगा। काफी इलाज कराने के बाद भी कोई फर्क नहीं पड़ा। मैं काफी चिन्ता में डूब गया और कहने लगा, बाबा मेरा दुख दूर करो। मेरी युगल 25 वर्षों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम जाती है। उसके पास मासिक ज्ञानामृत पत्रिका आती है। मैंने पढ़ी तो कुछ ज्ञान हुआ। फिर सेवाकेन्द्र जाने लगा। पाँव में दर्द होने के बावजूद 30-05-2016 को मेरा आबू की पावन भूमि पर जाना हुआ। वहाँ का शान्तिपूर्ण वातावरण, भाई-बहनों का निस्वार्थ स्नेह, निस्वार्थ सेवाभाव, विनम्रता देखकर बड़ी शान्ति मिली।

वहाँ के सभी परिसर देखे, फिर राजयोग का निःशुल्क कोर्स किया जिससे मेरा जीवन ही बदल गया। उस समय मैं अपने पाँव के दर्द को भूल गया मानो ठीक हो गया हो। वहाँ मुझे बहुत आनन्द आया। कभी-कभी खुशी के आँसू भी छलक जाते थे। मधुबन (माउण्ट आबू) से आने के बाद अब सेवाकेन्द्र पर सुबह-शाम नियमित मुरली सुनने जाता हूँ। चलते-फिरते बाबा को याद करता रहता हूँ। इससे मेरा दर्द भी कम है। चारों ओर शान्ति ही शान्ति है।

बाबा ने किया सूली को कांटा

ब्रह्माकुमार प्रदीप कुमार, रायकोट (लुधियाना), पंजाब

अक्तूबर, 2013 में मुझे पहली बार दिल का दर्द हुआ। अपोलो हॉस्पिटल लुधियाना में ई.सी.जी. और ई.सी.ओ.की गई। रिपोर्ट देखने पर पता चला कि समस्या ज्यादा है और एंजियोग्राफी भी करवा लेनी चाहिए लेकिन ऐसी तैयारी से नहीं गये थे तो पन्द्रह दिनों की दवाई लेकर घर आ गये।

अचानक आया हार्टअटैक

दिसंबर, 2013 में शान्तिवन (आबू रोड) जाना हुआ जहाँ अरावली पर्वत की गोद में ब्रह्माकुमारीज शान्तिवन परिसर 70 एकड़ में फैला हुआ है। वहाँ पहुँचते ही लगा कि खुशी का खजाना मिल गया है। बच्चे भी बहुत खुश, कभी बाबा के कमरे में बैठते और कभी पार्क में झूलते, सबने खूब आनंद उठाया। आखिर शिव बाबा से मिलने का दिन आ गया जिसका लंबे समय से इन्तजार था। शिव बाबा से 31 दिसंबर, 2013 को मिलन हुआ। अगले दिन दादी जानकी जी के जन्मदिन का उत्सव बहुत ही धूम-धाम से मनाया गया। उसी रात को, अचानक सोने के बाद हार्टअटैक आ गया। मुझे ट्रोमा हॉस्पिटल ले जाया गया और चार दिन आई.सी.यू. में रखा गया। डॉ.सतीश गुप्ता जी ने मेरा इलाज बहुत अच्छी तरह से किया। उन्होंने मुझे CAD (Coronary Artery Disease) कार्यक्रम के बारे में बताया, उनका बहुत शुक्रिया करता हूँ, वे तो एक फरिश्ते के समान हैं। अचानक टूट पड़े दुख के पहाड़ को बाबा ने सूली से कांटा बना दिया और हम रायकोट वापस आ गये।

अस्सी प्रतिशत ब्लॉकेज

रायकोट में एंजियोग्राफी कराई तो पता चला कि 60 प्रतिशत से लेकर 80 प्रतिशत तक ब्लॉकेज हैं। मुझे ऑपरेशन करवाने के लिये कह दिया गया मगर मैंने तो शान्तिवन प्रवास के दौरान जाना था कि बिना ऑपरेशन भी ब्लॉकेज खुल जाते हैं इसलिए एंजियोग्राफी की रिपोर्ट डॉ.गुप्ता जी के पास मेल कर दी और मुझे मार्च मास के कैड कार्यक्रम में शामिल कर लिया गया।

भूल गया दिल की तकलीफ को

मैं और मेरी युगल दोनों वहाँ पहुँचे। सुबह से लेकर शाम तक विभिन्न प्रकार से ज्ञान दिया गया कि किस तरह से ब्लॉकेज खुलेंगे। ब्लॉकेज के कारण भी बताये गए और उनका निवारण भी बताया गया। बहुत अच्छी डाइट दी गई, सैर किस तरह करनी है वो भी बताया गया। एक सप्ताह में ही बहुत बढ़िया परिणाम आये। मैं तो भूल ही गया कि मुझे दिल की कोई तकलीफ भी है। वहाँ सारा दिन खुशी में झूमते रहते थे। वातावरण बहुत ही बढ़िया है। दुनिया में कहीं भी ऐसा कोई हॉस्पिटल नहीं जहाँ बिना ऑपरेशन हार्ट के ब्लॉकेज खुल जायें मगर यह अद्‌भुत कार्यक्रम शान्तिवन (राजस्थान) में चल रहा है। वो दिन और आज का दिन, दोबारा सीने में कभी दर्द नहीं हुआ। डॉक्टर साहब और उनकी टीम सबको बहुत ही प्यार से संभालते हैं। ऐसा लगता है जैसे हम घर में ही बैठे हैं। वहाँ से हम ढेर सारी खुशियाँ लेकर लौटे। अब शान्तिवन में बार-बार जाने को मन करता है क्योंकि वहाँ की धरती और भाई-बहनें ही ऐसे हैं।

स्वभाव में नम्रता और वाणी में मिठास

वहाँ हमें जीवन जीने की कला सिखाई गई। अब तो ऐसा लगता है कि जीवन के इतने साल यूँ ही व्यर्थ गवाँ दिये। मैं पहले बहुत क्रोध किया करता था और हर काम में जल्दबाजी भी बहुत करता था। सबसे रोब से काम करवाना मेरी आदत बन गई थी। **वहाँ पर सिखाया गया**

कि खुद बदलेंगे तो संसार अपने आप बदल जायेगा, हम किसी को भी जबरदस्ती नहीं बदल सकते। हृदय को स्वस्थ रखने के लिए बताया गया कि सुबह-सुबह हल्की धूप निकलने पर कम से कम आधा घंटा तेज सैर करनी है और आधा घंटा शाम को धीरे-धीरे सैर करनी है। घर में तैयार किया गया शुद्ध शाकाहारी भोजन खाना है। घर-परिवार से लेकर समाज के हर सदस्य के प्रति सोच सकारात्मक रखनी है, अपने पर दृढ़ निश्चय और स्वभाव में नम्रता और वाणी में मिठास कायम रखनी है। राजयोग मेडिटेशन की विधि भी बताई गई कि कैसे अपने आपको आत्मा समझ परमात्मा को याद करना है। इससे शरीर में अच्छे हारमोन्स ज्यादा बनने लगते हैं और कायाकल्प हो जाता है। मन हल्का और शरीर हृष्ट-पुष्ट होने लगता है। हमें यह भी बताया गया कि अंदर फोल्डर बना कर व्यर्थ बातें नहीं रखनी हैं, उनका चिंतन भी नहीं करना है। मन की बातें विश्वसनीय लोगों से शेयर करते रहना है क्योंकि कहा गया है,

अगर दिल खोल दिया होता यारों से,
तो आज नहीं खोलना पड़ता औजारों से।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय आबू पर्वत (राजस्थान) में यह कैड कार्यक्रम पिछले 18 वर्षों से डॉ. सतीश गुप्ता जी के नेतृत्व में सफलतापूर्वक चल रहा है और यहाँ से हजारों लोग हृदय का सरल इलाज करवा चुके हैं। सबको बहुत लाभ हुआ है। यह अपने आप में एक मिसाल कायम करने वाला कार्यक्रम है इसीलिए आबू की धरती पर बार-बार आने का दिल करता है। ❖

गुणों की धारणा ही सच्चा शृंगार है

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

एक साधु नदी किनारे, धोबी के कपड़े धोने के एक पत्थर पर खड़े-खड़े ध्यान करने लगे। इतने में धोबी गधे पर कपड़े लादे वहाँ आया। उसने साधु को देखा तो प्रतीक्षा करने लगा कि धुलाई के पत्थर से साधु हटे और वह अपना काम शुरू करे। कुछ देर प्रतीक्षा करने पर भी जब साधु नहीं हटे तो उसने प्रार्थना की, महात्मा जी, आप पत्थर से हटकर खड़े हो जाएँ तो मैं अपने काम में लगूँ। धोबी की बात साधु ने अनसुनी कर दी।

धोबी ने फिर प्रार्थना की किन्तु साधु ने इस बार भी ध्यान नहीं दिया। अब धोबी ने साधु का हाथ पकड़ कर धीरे से उन्हें पत्थर से उतारने की कोशिश की। धोबी द्वारा हाथ पकड़े जाने पर साधु को अपमान महसूस हुआ। उन्होंने धोबी को धक्का दे दिया। साधु का क्रोध देखकर धोबी की श्रद्धा भी समाप्त हो गई। उसने भी साधु को धक्का देकर पत्थर से हटा दिया।

अब तो साधु और धोबी आपस में भिड़ गए। धोबी बलवान था अत: उसने साधु को उठाकर फेंक दिया। साधु भगवान से प्रार्थना करने लगा, हे भगवान, मैं इतने भक्ति-भाव से रोज आपकी पूजा करता हूँ फिर भी आप मुझे इस धोबी से छुड़ाते क्यों नहीं? जवाब में साधु ने आकाशवाणी सुनी, तुम्हें हम छुड़ाना चाहते हैं किन्तु समझ में नहीं आता कि दोनों में साधु कौन है और धोबी कौन? यह सुन साधु का घमण्ड चूर हो गया। उसने धोबी से क्षमा मांगी और सच्चा साधु बन गया।

दरअसल वेश धारण करने से नहीं बल्कि सदगुणों को आचरण में उतारने से साधुता आती है। धन से सम्पन्न होना तो सरल एवं सहज है लेकिन गुणों से सम्पन्न होना मुश्किल है क्योंकि मनुष्य बुराइयों को छोड़ने और अच्छाइयों एवं गुणों को ग्रहण करने में अपने आपको कमजोर समझते हैं और इस कमजोरी के कारण गुणों को देखने के स्थान पर दूसरों के दोष देखने लगते हैं। इसका सीधा-सा मतलब है कि व्यक्ति अपनी कमी-कमजोरी छिपाने के लिए दूसरों की कमी को देखते हैं। इसलिए हर मनुष्य अमृतवेले उठते ही कोई भी एक अच्छा कार्य करने का संकल्प ले और रात को सोते समय एक बुराई का त्याग करके सोए। जो ऐसा करते हैं वे गुणग्राही बन जीवन को गुणों से सम्पन्न बना लेते हैं।

बाबा ने करवाया बाइज्जत बरी

ब्रह्माकुमार सूरज, राहौद नगर, चाम्पा (छ.ग.)

पेशे से मैं गाड़ी-चालक हूँ। मेरे पिता जी अकाट्य कबीर-पंथी थे, अन्य धर्मों का मान-सम्मान भी रखते थे। वे मुझे भी संत कबीर की जीवन कहानियाँ, दोहे, साखी सुनाते थे, अच्छा लगता था। सुनते-सुनते मुझे भी संत कबीर के प्रति लगाव होता गया, मन-बुद्धि से कबीर जी के गुणगान करने लगा और उनसे सम्बन्धित अनेक कार्यक्रमों में जाने लगा।

अन्तरात्मा में घर कर गया ज्ञान

कबीर-पंथ के प्रति मैं अपने पिता जी से भी अधिक निश्चय बुद्धि वाला बन गया, मुझे इसके सिवाय अन्य धर्म, संस्था, आश्रम तुच्छ नजर आने लगे। एक बार नवरात्रि पर्व पर कुछ भाइयों को चित्र प्रदर्शनी समझाते देखा। टहलते हुए वहाँ पहुँचा, नये-नये चित्र देखे, कुछ बातें अच्छी लगीं और फिर घर-परिवार में आकर बतायीं। उन लोगों पर कोई असर नहीं हुआ लेकिन मेरा भाग्य जग गया। एक भाई के साथ मैं स्थानीय शाखा में गया। निमित्त भाई ने कहा कि 7 दिन का कोर्स करना पड़ेगा। मैंने पूछा, फीस कितनी लगेगी? भाई ने कहा, कोई फीस नहीं है, यहाँ का सब ज्ञान नि:शुल्क है, सिर्फ आपको हर-रोज एक घंटे का समय देना है। अगली सुबह ज्ञान लेने पहुँच गया। मुझे समझाया गया कि आत्मा अलग है, शरीर अलग है। आत्मा की पढ़ाई पढ़ने वाले नर-नारी, देवी-देवता पद को प्राप्त करते हैं। यह ज्ञान मेरी अंतरात्मा में घर कर गया। तब से लेकर आज तक ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। मैं बाबा का पद्मापद्म शुक्रिया करता हूँ, शुक्रिया बाबा, शुक्रिया।

कार को ले गया पुलिस चौकी

सन् 2011 की एक घटना है। एक व्यापारी भाई ने अपने परिवार को मैहर चित्रकूट तीर्थस्थल दर्शन कराने के लिए रथवान बनाकर मुझे साथ ले लिया। राहौद से चित्रकूट की दूरी 600 कि. मी. से ऊपर है। पाँच दिन बाद सकुशल वापस लौट रहे थे कि राहौद से 60 कि.मी.दूर, संकरी गाँव के पास, बिलासपुर की तरफ से मोटरसाइकिल सवार एक व्यक्ति ने हमारी कार को टक्कर मारी और गिर गया। उस व्यक्ति को ज्यादा चोट नहीं लगी थी। वह नशे में था, बोलने की स्थिति में नहीं था। तभी घटनास्थल पर जनता इकट्ठी हो गयी और गाड़ी को चारों ओर से घेर लिया। एक पुलिस वाला वहाँ पहुँच गया और कार को पुलिस चौकी ले गया। वहाँ पूछताछ के उपरांत टी.आई. सर ने गाड़ी के कागज व ड्राइविंग लाइसेंस जमा करवा कर एक घंटे के बाद हमें जाने की अनुमति दे दी। हम घर आ गये।

केस में मिली जीत

एक माह बाद गिरफ्तारी वारंट आ गया क्योंकि मोटरसाइकिल वाले व्यक्ति ने रिपोर्ट दर्ज करवा दी थी। कार मालिक भाई ने जमानत के लिए सब इंतजाम कर लिए थे। केस जिला सिविल कोर्ट में चल रहा था। जमानत तुरंत हो गयी और मुझे पेशी की दिनांक दे दी गयी। इस तरह से पेशियों का सिलसिला चलने लगा। मैंने बाबा से कहा, बाबा, मेरी कोई गलती नहीं है फिर भी धन और समय कोर्ट के चक्कर में व्यर्थ बर्बाद हो रहे हैं। ये बातें बाबा को रोज अमृतवेले कहता था। दिखता था कुछ और लेकिन प्यारे बाबा की शक्ति से हो गया कुछ और। गवाहों को कोर्ट में उपस्थित किया गया। उन्हें मेरे खिलाफ कोई भी सबूत नहीं मिला। पूरे 10 गवाहों में से 8 गवाह मेरे पक्ष में हो गये और 2 गवाह दूसरे पक्ष में थे। इस तरह से केस में मेरी जीत हुई और कोर्ट ने बाइज्जत बरी कर दिया। यह केस दो वर्षों के अंदर ही बंद हो गया। सब शिवबाबा का ही कमाल है इसलिए मैं बाबा को दिल से शुक्रिया करता हूँ।

मैं कबीर-पंथी भाई-बहनों से निवेदन कर रहा हूँ कि आप सभी एक बार शिवबाबा के घर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में अवश्य पधारिये। मुझे यहाँ नया जीवन मिला है। आप भी एक बार सेवा का मौका अवश्य दें। सभी पाठक भाई-बहनों से निवेदन कर रहा हूँ कि ज्ञानामृत पत्रिका स्वयं पढ़ो और नये-नये भाई-बहनों को देकर उनका उमंग-उत्साह बढ़ाओ। अन्त में यही कहूँगा, **अच्छा दिखने के लिए मत जिओ बल्कि अच्छा बनने के लिए जिओ।**

पानी में डुबकी लगाकर तीर्थ किये हजार।
इनसे क्या होगा अगर बदले नहीं विचार।।

❖

अच्छे व्यवहार ने करवाई जल्दी रिहाई

ब्रह्माकुमार अरुण कुमार, भद्रावती (कर्नाटक)

मेरी आयु 45 साल है, दर्जी (Tailoring) का काम करता हूँ। परिस्थितिवश सम्पत्ति को लेकर मेरे पिताजी और चाचा के बीच झगड़ा शुरू हुआ। न्यायालय में 20 साल तक केस चला। अंत में चाचा जी के पक्ष में फैसला आया। इससे क्रोधित होकर मैंने चाचा जी का खून कर दिया। इसमें मेरे पाँचों भाइयों को तथा मुझे उम्र कैद की सजा हुई। मैं शिवमोग जेल में सात साल तक और बैंगलूरू जेल में दो साल तक रहा लेकिन जेल में रहते हुए मादक पदार्थों का सेवन करना, दूसरों को बेचना, झगड़ा, मारपीट करना, यह सब करता था। इससे तंग आकर अधिकारियों ने विजयपुर जेल में मेरा तबादला कर दिया और वहाँ के अधिकारियों को बता दिया कि यह बहुत खतरनाक कैदी है, इस पर नजर रखना।

विजयपुर जेल में आने के चंद दिनों बाद ही पता पड़ा कि जेल में रोजाना राजयोग का अभ्यास कार्यक्रम चलता है। तब मैंने निमित्त ब्रह्माकुमारी सरोजा बहन और ब्रह्माकुमार गंगाधर भाई से सात दिन का कोर्स किया। जैसे ही कोर्स पूरा किया, बदलाव होने लगा और अनुभव हो गया कि स्वयं परमपिता परमात्मा मुझे ज्ञान सुना रहे हैं। तब से लेकर बुरे कर्म – गांजा पीना, बेचना, झगड़ा करना – सब छोड़ दिये।

पिछले सात साल से शिवबाबा के ज्ञान में चल रहा हूँ। इस बीच कोई भी बुरा काम नहीं किया और बाबा की मुरली एक दिन भी मिस नहीं की और एक बार भी पैरोल लेकर घर नहीं गया। बस, बाबा और मैं, तीसरा न कोई।

इसके फलस्वरूप, कर्नाटक सरकार ने अच्छे व्यवहार के लिए 26-01-2016 को मुझे रिहा कर दिया। मैं अभी बाबा का पक्का बच्चा बन गया हूँ। अभी योग-तपस्या कार्यक्रम में मधुबन वरदान भूमि से होकर आया हूँ। यह ईश्वरीय ज्ञान जीवन परिवर्तन करने वाला है इसलिए सभी भाई-बहनों से अनुरोध है, आप भी अपना भाग्य बना लो। अब नहीं तो कभी भी नहीं। ❖

आवश्यक सूचना

सरोजलाल जी मल्होत्रा ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल आफ नर्सिंग (शिवमणि होम के नजदीक, तलहटी, आबू रोड) के लिए एक होस्टल वार्डन (पुरुष, 30-45 वर्ष की आयु) की जरूरत है।

योग्यता – मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट, कॉलेज में वार्डन के रूप में कम से कम 3 वर्ष का अनुभव।

Email - nntagrawal@gmail.com
मोबाइल नं. 8432403244/9414143717

शोक में सहारा बना ईश्वरीय ज्ञान

ब्रह्माकुमार रमेश एम.पटेल, जोथाना (अमरेली), गुजरात

सन् 2006 में मेरे एक परिचित ब्रह्माकुमार भाई के साथ एक ब्रह्माकुमारी बहन मेरे घर आए और ब्रह्माकुमारीज़ का साहित्य प्रदान किया। मैंने कहा, मेरे पास तो अखबार पढ़ने का समय भी नहीं है तो इसका क्या करूँगा? इसके बाद वो परिचित ब्रह्माकुमार भाई मुझे कई बार मिले, कई बार निमन्त्रण दिया पर मेरा उत्तर वही रहता था कि समय नहीं है।

एक दिन अचानक उनका फोन आया कि अपने गाँव में ब्रह्माकुमारी बहन के राजयोग प्रवचन की व्यवस्था करो। मैंने हाँ कह दिया। जून, 2006 को पुरुषोत्तम मास की शुरूआत के दिन यह प्रवचन कार्यक्रम शुरू हुआ। बहन जी शाम 7.50 बजे गाँव में आते, 10 मिनट मेरे घर बैठते, इतने समय में मेरा पुत्र विवेक और मैं कार्यक्रम की तैयारी कर लेते, फिर सभी गाँव वाले प्रवचन सुनते, सभी को राजयोग की जानकारी बहुत अच्छी लगी। यह कार्यक्रम 1-06-2007 से 09-06-2007 तक निर्विघ्न चलता रहा।

प्रवचन में मिला समाधान

विवेक बी.कॉम का छात्र था, 10-06-2007 को वह कुछ साथी लड़कों के साथ तालाब पर नहाने गया और पानी में डूबने से उसकी इहलीला समाप्त हो गई। यह दुर्घटना दिन के 1.30 बजे हुई, 5.00 बजे उसका अग्नि संस्कार हो गया। अपने नियम प्रमाण शाम 7.50 पर बहन जी प्रवचन के लिए आई। दुर्घटना की जानकारी मिलने पर उन्होंने मेरी युगल को बहुत सान्त्वना दी। विवेक हमारा इकलौता पुत्र था। बहन जी यह कहकर वापस चले गए कि अब दो-चार दिन के बाद ही हम आएंगे। जब मुझे पता पड़ा कि बहन जी दो-चार दिन बाद आएंगे तो मैंने तुरन्त फोन किया, ''पहले की तरह प्रतिदिन आइये क्योंकि गाँव में रसम है कि तेरह दिन तक गाँव वाले हमारे घर आकर, हमारे परिवार को सान्त्वना देंगे। मैं, मेरा परिवार तथा सभी गाँव वाले आपके भी सान्त्वना के बोल सुनेंगे और शान्ति प्रार्थना करेंगे।'' अगले दिन से बहन जी ने आना शुरू कर दिया और शरीर और आत्मा के बीच क्या संबंध है उसके बारे में तेरह दिनों तक बहुत अच्छा सुनाया। इकलौते पुत्र के चले जाने से हम दोनों को कई बुरे (व्यर्थ) संकल्प चलते थे। उनका समाधान बहन जी के प्रवचन में मिलने लगा। मेरे मन में संकल्प चला कि शिवबाबा को मालूम था कि 10 तारीख को विवेक भाई शरीर छोड़ देने वाले हैं, बाद में रमेश भाई-मालती बहन अकेले पड़ जायेंगे इसलिये पहली तारीख से ही हमें ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ जोड़ दिया।

हमारे लिए तो ब्रह्माकुमारी संस्था ही तारणहार बन गयी, नहीं तो व्यर्थ संकल्पों ने हमारी जीवन कहानी कुछ और ही बना दी होती। मैं निमित्त बहन जी का आभारी हूँ। हमारे घर से सेवाकेन्द्र करीब पन्द्रह कि.मी. दूर है, फिर भी उन्होंने एक साल तक हर रोज एकदम सही समय पर घर आकर क्लास करवाया। कई बार ऐसा महसूस होता था कि सेवा के लिए प्रकृति दासी बन जाती है। मुरली क्लास शुरू होने से आधे घण्टे पहले या मुरली के समय जोरदार बरसात होने लगती थी और जब मुरली पूरी हो जाती थी तब बरसात भी रुक जाती थी। अब तो हम भी सेवाकेन्द्र पर बार-बार जाते हैं। हमें 45 वर्ष की उम्र के बाद यह ज्ञान मिला। अब लगता है कि 45 वर्ष एकदम व्यर्थ में चले गये। ❖

क्रोध और हम

सीमा डोडा, फाज़िल्का (पंजाब)

क्रोध का नाम लेते ही हमारे सामने एक ऐसा चेहरा आता है जिसकी आँखें लाल, भौंहें तनी, मूंछें बड़ी-बड़ी हैं। इस चेहरे के प्रति हमारा भाव नफरत और भय का मिला-जुला होता है लेकिन हममें से कोई भी ऐसा नहीं होगा जिसे क्रोध का अनुभव ना हो। वैसे तो क्रोध को भूत, अग्नि, चांडाल आदि नाम दिये जाते हैं फिर भी हम हर छोटी-छोटी बात पर क्रोध करते हैं और हमें पता ही नहीं चलता कि यह अनचाहा मेहमान कब आ जाता है। हम दिन में कई बार इसकी मेहमान नवाजी करते हैं चाहे रात के 12 बजे हों या दिन के 2, इसके आने-जाने के दरवाजे 24 घण्टे खुले हैं।

क्रोध का औचित्य

हम सौ के नोट को जेब में रख कर फिर चेक करते हैं कि कहाँ-कहाँ खर्च किया, क्या हमने यह भी कभी चेक किया कि दिन में कितनी बार क्रोध किया और उसमें कितना जायज़ था ? यदि हम चेक करें तो पायेंगे कि सौ प्रतिशत हमारा क्रोध नाजायज़ होता है। यह क्रोध हमें अन्दर ही अन्दर इतना खोखला करता है जैसे कोई अमीर फिज़ूलखर्ची से कंगाल हो जाता है। **क्रोध तनाव और डिप्रेशन का कारण बनता है; रिश्तों को कड़वा तथा जीवन को बोझिल बनाता है व आयु को निगल जाता है।** सामान्य रूप में हम एक मिनट में 10 से 12 बार श्वास लेते हैं लेकिन क्रोध की अवस्था में उसकी गति 20 से 22 बार प्रति मिनट हो जाती है और जब हम परमात्मा की तरफ ध्यान लगाते हैं तो गति 6 से 8 बार प्रति मिनट हो जाती है। निष्कर्ष यही निकलता है कि एक बार, एक मिनट तक क्रोध करने से हम अपनी आयु के 8 से 10 श्वास खो देते हैं और शान्त रह कर परमात्मा का ध्यान करने से 12 से 14 श्वास बचा लेते हैं इसलिए कहा जाता है कि योगियों की आयु 100 वर्ष से भी ऊपर होती थी।

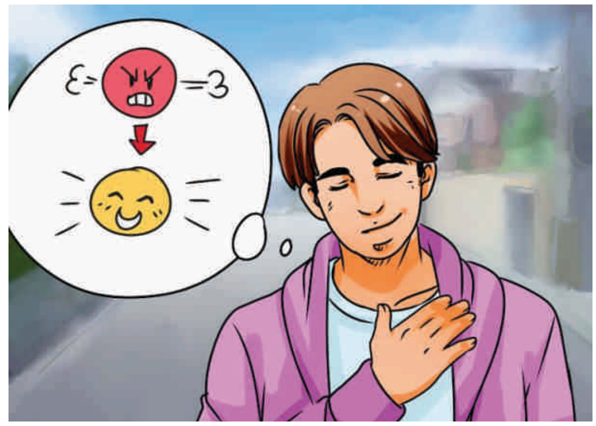

कैसे जीतें क्रोध को

क्रोध को जीतने का सरल उपाय है, दिन की शुरूआत सकारात्मक सोच के साथ करें; मन्दिर, गुरुद्वारे जाकर या घर में बैठ एकाग्र मन से परमात्मा को याद करके करें। हम शरीर को चाय-नाश्ता देकर रिचार्ज करते हैं और मोबाइल को लाइट से जोड़ कर चार्ज किया जाता है। मन को चार्ज करने के लिए परमात्मा रूपी पावर हाऊस से जुड़ना आवश्यक है। जितनी चार्जिंग पावरफुल उतना मन शान्त। आओ, इसी क्षण मन को चार्ज करें और प्रफुल्लित हो जाएँ। क्रोध का दूसरा कारण है सामने वाले को क्रोधित देख क्रोध करना। फिर तो हम गुलाम हो गये। सामने वाले हँसें तो हम हँसें, वे क्रोध करें तो हम भी क्रोध करें। क्या हमारी स्वयं पर पकड़ नहीं है? क्रोध का भूत आ रहा है, भगा सकते हो तो भगाओ या खुद शान्त रहो, चुप हो जाओ, यही उचित जवाब है। **कुछ लोग कहते हैं, किसी को झूठ बोलते या अपराध करते देख क्रोध आ जाता है। क्या क्रोध अपने आप में अपराध नहीं है? क्षणिक क्रोध भी परिवार बर्बाद कर सकता है, जेल की हवा खिलवा सकता है, सारी ज़िन्दगी का पश्चाताप दे सकता है।**

गुलाम बनने की बजाय गुलाम बनाएं

क्रोध के कारण हम डिप्रेशन, तनाव, सम्बध विच्छेद व अनेक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। एक रिसर्च के अनुसार हम जितना अधिक क्रोध करते हैं उससे अपच, एसिडिटी व मधुमेह आदि रोग लग जाते हैं। क्रोध हमें उस तरह जलाता है जैसे आग सूखी लकड़ी को जलाकर भस्म

(शेष...पृष्ठ 12 पर)

समस्या को सुअवसर में परिवर्तन करने की कला

ब्रह्माकुमार विनायक, आबू पर्वत

जीवन में सफलता पाने या महान बनने की बात जब आती है तो अधिकांश लोगों की शिकायत यह होती है कि उनको विशेष बनने का अवसर ही नहीं मिला, अदृष्ट ने उनका साथ नहीं दिया इसलिए वे कुछ कर नहीं पाए! क्या यह कारण उचित लगता है? इतिहास प्रसिद्ध दिग्गजों के पास सुअवसर क्या अपने आप चलकर आये थे? यह एक मिथ्या परिकल्पना है कि जिसको अवसर मिला, वही महान बना बल्कि महान वो बना जिसने कठिनाई को ही सुअवसर में परिवर्तन करके दिखाया।

सांप का जहर मृत्यु के समान है लेकिन मानव ने उसको ऐसे परिवर्तन कर दिखाया कि कुष्ठरोग (मृत्यु से भी भयानक) से मुक्ति पाने की औषधि बना दिया। मृत्यु रूपी विष को भी संजीवनी बूटी के रूप में परिवर्तन कर दिया। वैसे ही, जीवन को असफल, व्यर्थ बनाने वाली बातों को परिवर्तन कर सफलता का आधार बना लेना, इस कला से एक साधारण मानव, महामानव बन सकता है। ऐसे प्रसिद्ध महापुरुष जिन्होंने कठिनाइयों को ही सुअवसर के रूप में परिवर्तन कर सफलता पाई, उनमें से तीन उदाहरणों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

कारागृह बन गया तपस्याधाम

इस दुनिया में दो स्थान हैं जहाँ कोई भी जाना नहीं चाहते। एक है कब्रिस्तान और दूसरा है कारागृह। समझते हैं, कारावास तो मृत्यु से भी बड़ी सजा है। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले एक क्रांतिकारी तरुण को ब्रिटिश सरकार ने मिथ्या आरोप लगाकर जेल भेजा। सलाखों के पीछे पड़ा व्यक्ति दो ही काम कर सकता है। वहाँ से भागने की कोशिश करता है या अपनी तकदीर पर अफसोस लेकिन इस युवक की विचारधारा ही अलग थी। इस युवक ने सोचा कि जीवन व्यर्थ करने वाली सज़ा को ही जीवन को सार्थक बनाने वाले अवसर के रूप में क्यों न परिवर्तन कर दूँ? इसी दृढ़ संकल्प से उसने अंधेरे कमरे में आध्यात्मिक साधना आरंभ की। अभ्यास करते-करते यह अनुभव किया कि यह कारागृह नहीं बल्कि दुख-अशान्ति भरी बहिर्मुखी दुनिया से अलग अंतर्मुखता की अनुभूति कराने वाला तपस्याधाम है। दिन प्रतिदिन उसकी साधना गहरी और परिपक्व होती गई। **उसने दुख देने वाले अकेलेपन को सुखी बनाने वाले एकांतवास में परिवर्तन कर लिया। कैदी बनकर अंदर गए और महान दार्शनिक बनकर बाहर निकले।** उस युवक का नाम था अरविंद घोष जिन्होंने महर्षि बनकर केवल भारत को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को ज्ञान का दर्शन कराया।

श्राप नहीं वरदान

एक छह साल का बालक रेलगाड़ियों में अखबार

बेचता था। एक दिन गाड़ी में बहुत भीड़ थी और गाड़ी चल चुकी थी। फिर भी यह बालक उसमें चढ़ गया लेकिन अंदर जा नहीं पाया, एक ही हाथ से ट्रेन को पकड़े हुए लटक रहा था। कुछ देर बाद बालक अपना नियंत्रण खोकर गिरने ही वाला था कि एक व्यक्ति ने बालक को बचाने के लिए उसके दोनों कान पकड़कर रेल के डिब्बे के अंदर खींच लिया। क्या कहें! विधि की लीला!! पूरे शरीर का भार कानों पर पड़ने से कानों को अंदर से चोट लग गयी और डॉक्टरों ने कहा कि बालक को जीवनभर बहरा होकर जीना पड़ेगा। अब कहिए, एक तो इतनी कम उम्र और बहरा भी, क्या आपको लगता है कि आगे चलकर यह बालक कुछ कर पाएगा? यह बालक था सर थामस आल्वा एडिसन, विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक जिसने बल्ब का आविष्कार करके सारी दुनिया को रोशनी दी। यह कैसे संभव हुआ? सर एडिसन हंसते हुए कहते थे कि बहरेपन ने ही तो मुझे वैज्ञानिक बनाया। **आवाज की दुनिया से परे रह विज्ञान की गहराई में जाकर आविष्कार करने का सुअवसर बहरेपन से मिला, यह मेरे लिए श्राप नहीं बल्कि वरदान था।** वास्तव में बहरापन वरदान नहीं है लेकिन सर एडिसन श्राप को भी वरदान के रूप में परिवर्तन करने की कला के द्वारा महान व्यक्ति बने।

अंधेरे को सोझरा बना दिया

तीन साल का एक बालक अपने पिता के औजार से खेल रहा था। खेलते-खेलते औजार आँख पर लग गया और आँख चली गयी। लापरवाही के कारण दूसरी आँख में भी रोग लग गया और कुछ ही दिनों बाद बालक पूरा अंधा हो गया। क्या कोई सोच सकता है कि इस दुख के पहाड़ को कल्याण में परिवर्तन किया जा सकता है? लेकिन उस बालक ने करके दिखाया। उसने सोचा, इस दुनिया में मेरे जैसे कितने होंगे जो रोशनी से वंचित हैं और दुनिया के सौंदर्य को देख नहीं सकते? वह एक ऐसी कल्याणकारी घड़ी थी जब बालक के मन में दृढ़ संकल्प ने जन्म लिया कि अंधों के लिए ऐसे आलेख का अनुसंधान किया जाना चाहिए जिससे वे न देखते हुए भी इस दुनिया को अनुभव करें और सार्थक जीवन जीएँ। **अपने दर्द का परिवर्तन कर इस बालक ने ऐसी चीज बनाई जो औरों के दर्द का शमन करे।** वह बालक था सुप्रसिद्ध ब्रेईल लिपि का अन्वेषक लूईस ब्रेईल।

माता बनी मोहजीत

आध्यात्मिक मार्ग पर दृढ़ता से चलने वाली एक माता का पुत्र किसी बात पर उससे नाराज हो उठा और क्रोध की बेहोशी में माँ को थप्पड़ लगा दिया। कहिए, क्या इससे बढ़कर अकल्याणकारी घटना और कोई हो सकती है? ऐसी माता से अधिक दुखी इस दुनिया में कोई मिल सकता है? नहीं ना? लेकिन परिवर्तन करने की कला ने ऐसा जादू दिखाया, वह माता मुसकराते हुए कहने लगी, ''नहीं, वह थप्पड़ नहीं था बल्कि जिस मोह के जाल को जीतने में मेरी पूरी आयु लग सकती थी, उस जाल से छुड़ाने वाला एक शक्तिशाली अस्त्र था वह। जैसे ही थप्पड़ लगा, एक क्षण में मोह ने विदाई ले ली और मैं भगवान के प्यार में लीन हो गई।'' दुख में फंसाने वाली बात को दुख से छुड़ाने वाले अस्त्र के रूप में स्वीकार करना, यह है परिवर्तन की कला।

पुरुषार्थी के लिए एक अनोखा तोहफा

जैसे पर्वतारोही अपने सामने आने वाले हर पत्थर को सीढ़ी समझकर उसी के आधार से शिखर पर पहुँच जाता है वैसे ही, सामने आने वाली हर समस्या को अगर अवसर के रूप में परिवर्तन करने की कला प्रयोग में लाएँ तो हम भी सफलता के शिखर पर विराजमान हो सकते हैं। समस्या को अवसर में परिवर्तन करने के लिए पुरुषार्थी को अपना संस्कार परिवर्तन करना होगा, जो सहज राजयोगाभ्यास का मुख्य उद्देश्य है। देखा गया है कि कई पुरुषार्थी आत्माएँ भगवान से कई प्रकार की प्रार्थनाएँ करती हैं – ''बाबा फलानी परिस्थिति, व्यक्ति या स्थान के कारण मेरा पुरुषार्थ रुक गया है, आप उसे दूर कर दो या फलाने

व्यक्ति या स्थान से दूर ले चलो तो मैं आगे बढ़ सकूँ।' कितनी आश्चर्यजनक बात है! क्या आपने कभी सुना कि परीक्षा में बैठने वाला कोई विद्यार्थी भगवान से इस तरह प्रार्थना करे कि भगवान इस परीक्षा को दूर करो तो मैं उत्तीर्ण होकर आगे बढ़ सकूँ? असंभव है। परीक्षा एक विधि है जिसके द्वारा विद्यार्थी का स्तर निम्न वर्ग से उच्च वर्ग में परिवर्तन होता है। वैसे ही समस्या आना भी एक विधि है जिसको अवसर में परिवर्तन करके हम सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं।

परिवर्तन की विधि

सेवासाथी कठोर है, क्रोधी है, निंदा करता है तो हम उस क्रोध-निंदा को अपनी सहनशक्ति को बढ़ाने के साधन के रूप में, टीका-अवहेलना-अपमानित करने वाली बातों को समाने की शक्ति के प्रशिक्षण के रूप में, औरों की नफरत-वैर-विरोध को लगाव-झुकाव की जंजीर से मुक्त करने वाले अस्त्र के रूप में, साधन-सुविधाओं के अभाव को इच्छा मात्रम् अविद्या स्थिति के अभ्यास के रूप में, अशांति फैलाने वाली, हलचल मचाने वाली बातों और घटनाओं को शान्तिधाम की ओर बुद्धि खींचने वाले चुंबक के रूप में, शारीरिक पीड़ा को अशरीरी स्थिति के अभ्यास कराने वाले शिक्षक के रूप में, लौकिक-अलौकिक परिवार से स्नेह-प्यार नहीं मिल रहा है, तो अहो सौभाग्य है! उस स्नेह की कमी को प्रेमसागर शिवपिता के अखंड प्रेम की अनुभूति कराने वाले अवसर के रूप में, अकेलेपन की वेदना को 'एक बाप दूसरा न कोई' इस श्रेष्ठ अवस्था के आसन के रूप में परिवर्तन करें।

गुप्त रूप में आया हुआ सुअवसर

जब आकाश को काले बादल घेर लेते हैं, बादलों की गड़गड़ाहट कान पर थपकती है, बिजली ही बिजली आँखों में कौंधती है, तो क्या कभी आपने सुना कि लोग भगवान से प्रार्थना करें कि इन बादलों को दूर हटाओ? नहीं। बल्कि चारों तरफ खुशी फैल जाती है, वातावरण में उमंग-उत्साह भर जाता है कि अब यह भयानक दृश्य परिवर्तन होकर जलवर्षा का सुंदर दृश्य साकार होगा जो कि मानव-पशु-पक्षियों के जीवन का आधार है। समस्या को नहीं बल्कि समाधान को देखा जाता है। वैसे ही व्यक्ति, परिस्थिति या स्थान, जो समस्या का विकराल रूप धारण कर आया है, को देख इस वास्तविकता को समझना है कि यह समस्या नहीं बल्कि गुप्त रूप में आया हुआ एक अवसर है जो मंजिल पर ले जाने वाला है। मुझे केवल इतना ही करना है कि इस विकराल रूप को अवसर के रूप में परिवर्तन करना है।

जितनी बार हम समस्या को अवसर के रूप में परिवर्तन करेंगे उतनी बार हमारे द्वारा अन्य आत्माओं के समक्ष ज्ञान-गुण और शक्तियों की प्रत्यक्षता होगी जिससे गुप्त वेश में आये हुए शिवपिता की प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा। ❖

बम-बम भोले

ब्रह्माकुमार दिनेश इंगोले, विजय नगर, इंदौर (म.प्र.)

दुनिया कहती, बम-बम भोले, प्यारे अब तो शिव का होले।
63 जन्मों से भटक रहा है, तू तो बदल-बदल कर चोले।

इस संगम पर आकर बाबा, अपने राज सभी है खोले।
जब वो आया खुद मिलने तो, उससे अविनाशी सुख पाले।

दहक रहे हैं कई जन्म से, मन में तेरे तम के शोले।
उन्हें शांत करने आया वो, तू उसकी श्रीमत अपना ले।

और नहीं कुछ करना तुझको, बस मन को प्रभु में लगा ले
जीवन सारा बदले तेरा, खुल जाएं तकदीर के ताले।

देख के तेरे इस परिवर्तन को, कहेगा ये जग बम-बम भोले।

कलियुग के नजारे

चंद्रभान लोढ़ा, आळंदी (पूना)

आज चारों तरफ दुख, अशांति, तनाव और बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। कोई भी सुखी दिखाई नहीं दे रहा है। पापाचार, भ्रष्टाचार, दुराचार, अत्याचार की अति हो रही है। धर्मसत्ता, राज्यसत्ता के नाम पर झगड़े ही झगड़े दिखाई दे रहे हैं। लूटमारी, ढोंगबाजी के साथ-साथ धर्म के नाम पर, समाज सेवा के नाम पर बड़ा व्यापार तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है। संप्रदायवाद बहुत बढ़ गया है, लोग अपना नाम प्रसिद्ध करने में ही लगे हुए हैं। अंदर एक तो बाहर दूसरा होने के कारण किसी का, किसी पर असर नहीं पड़ रहा है, चारों ओर पतन ही पतन है। धर्म बेचने की बोली लग रही है, मान, शान, चादर के चक्कर में हालतें बिगड़ रही हैं। सभी तरफ स्वार्थ ही स्वार्थ है। कोई आगे बढ़ रहा है तो उसे गिराने की सोच चल रही है।

देना पड़ेगा कर्मों का हिसाब

एक तरफ 'जैसा कर्म वैसा फल' बता रहे हैं तो दूसरी तरफ जादू-मंत्र-तंत्र-भविष्य-वास्तुशास्त्र में अटके हुए हैं, औरों को डराकर कमाई कर रहे हैं। ठगी में उस्ताद बने हुए हैं। मरने के बाद 'स्वर्ग पधारा' कहते तो रोना किस बात का? सभी नियमों का उल्लंघन हो चुका है। ना मंदिर सुरक्षित, ना मंदिर की मूर्ति सुरक्षित, चारों तरफ पहरा ही पहरा लगा हुआ है। व्यसन-फैशन बढ़ रहे हैं। पैसे कमाने के लिये देह का प्रदर्शन हो रहा है। घर-घर में बँटवारे, खून, झगड़े, कोर्ट-केस चल रहे हैं। भाई-भाई दुश्मन बन गये हैं। जन्म देने वाले माँ-बाप को आश्रम का रास्ता दिखाया है और बड़ी-बड़ी तीर्थयात्राएँ कर, बड़े-बड़े मंदिर बनाकर, थोड़ा-सा दान-पुण्य कर स्वयं को धर्मात्मा कहाने की कोशिश कर रहे हैं। कर्मों का हिसाब-किताब तो उन्हें देना ही पड़ेगा।

क्या यही जीना है ?

खान-पान की पवित्रता का पूरा सत्यानाश हो गया है। घर की रोटी विष बन गयी है, बाहर का खाना अमृत बन गया है। पेटी भरने के लिए रात-दिन भाग रहे हैं इससे पेट की बीमारी बढ़ गयी है। रात को सुख की, चैन की नींद नहीं, नींद की गोली लेनी पड़ रही है। धर्म करने के लिये फुर्सत नहीं, क्या यह सुख है? क्या यही जीना है? क्या यही आनंद, प्रेम, शान्ति है? साल में एक दिन धर्म का महोत्सव मनाकर, गंगा में डुबकी लगाकर, तीर्थयात्रा करके, किया हुआ पाप मिटेगा क्या? 'अकेला आया, अकेला जाना' यह केवल लिखत रह गई है। दशहरे पर रावण को जलाने की कोशिश करते हैं लेकिन घर-घर में रावण अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार बढ़ते ही जा रहे हैं। बड़ी-बड़ी समस्याएँ आ रही हैं लेकिन जागृत होने का नाम नहीं, कुंभकर्ण की नींद में हैं।

सर्वश्रेष्ठ है प्रभु की शरण

इसी महाभयानक समय में गीता-ज्ञानदाता का दिया हुआ वचन 'यदा-यदा ही धर्मस्य...' याद करें। वह समय अभी चल रहा है। अपना दिया हुआ वायदा पूरा करने वे अब इस धरती पर पधारे हैं। यह खुशखबरी सभी मनुष्य आत्माओं के लिये, सभी धर्म वालों के लिये है। भगवान किसी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, वे तो स्वयंभू हैं इसलिए उनका अवतार या अवतरण होता है और वह हुआ भी है। अब जल्दी ही महापरिवर्तन होने वाला है। भगवान कोई देहधारी नहीं, वे तो निराकार ज्योतिबिन्दु शिव परमात्मा हैं। वही सबके मालिक हैं। वही दुखहर्त्ता-सुखकर्त्ता, भोलानाथ हैं, सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देने वाले अमरनाथ हैं। परमपिता-परमात्मा का परिवर्तन का कार्य पूरे विश्व में बहुत तेजी से चल रहा है। सतयुग की स्थापना के लिये पूरे विश्व में उन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखाओं की स्थापना की है जिनमें राजयोग द्वारा कौड़ी जैसा जन्म हीरे जैसा बनता है। यह ताकत सिर्फ उस प्रभु में ही है। उनकी शरण ही श्रेष्ठ शरण है, बाकी कोई उपाय बचा नहीं है। सारी बातों की विस्तृत जानकारी और अपना भाग्य बनाने के लिये बिना मूल्य लेकिन बहुमूल्य भावभरा आमंत्रण है कि नजदीकी सेवाकेन्द्र से अवश्य संपर्क करें। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125